पंचम अभ्याय

चिन्हर के काव्य में नारे-भावना का विकास
सम्पूर्ण हिन्दी-भाषित ब्रम्ह-दार्शनिक भबन करूं, तो पता चलता है कि नारो-भाषन का ज्ञानन क्षेत्र अद्वैत विविध रक्षा है। आदि-वित्तरे हैं एक अद्वैतक हिन्दो-कविता का उसके विविध रूप वित्तरे किए गये हैं। कहा उसकी भाषा के वर्ताल-प्रथम रूप की लिखा गया है, तो कहा उसे संघार के वृद्धि बाचक नहीं लिखा दिया गया। कहा उसे ब्रम्ह की शाखा में राडा भाषा गया है, तो कहा-कहा उसकी पुनरे भाषा में विभाजन की स्थापना के दौरान प्रथम भूमि प्रादेशिक। इस प्रकार नारो-भाषन के संबंधित उसके प्रथम आदि-भाषन पर अलौकिक तरीके से बात होता है कि नारो-भाषन का विविध कार्य-कार्य ने युशेल के दौलत्यामान भूले में हो फक्तागार, उसकी भाषा के विविध फल की और भाषित नया को दृष्टि रूप हो गया।

वाक्य परिवर्तित नहीं है, बाण-कार्य पर उसके मान्यताएं परिवर्तित होते रहते हैं। विषय विवाह है अनुप्रूप वातावरण की ब्रम्हविभाजन हुआ है और निरस्तर रूप है उसका प्रभाव भारतीय साहित्य पर भी पूर्ण रूप

----------------------------------------------------------------------------------

1- मतला हुआ तु नारिया विशिष्ट महारा कन्ठु।
लन्जर ले तु वर्षाहु महागा पर जन्तु ल।
करिश्चापन्नु - आदि-काल : अद्वैत काम्य
2- उचर-मध्य काल (रोकिकाल, २००००-१६००)
3- कामिणा माना विशिष्ट, जो ब्रह्मा तो लाह।
वे हर चरणार राचिया, तितके निकट न ग्राह।
महानु स्वाद - मक्तिकाल, अन्त-काम्य
3- सर्व रूप विमोह, रिचे रिहीरिह देख।
पांच हुवी सुम पात्र, रेहि पिस लहरिह देख।
महाभाषा जायते - मक्तिकाल, ब्रजको-काम्य
रूप है फूल है। विज्ञान में आदर्श क्रम और यथार्थ अनुसरण होता है। भारतीय समाज ने जब प्रत्येक वस्तु को विज्ञान और बंसा पहलू देखते प्रारंभ किया, तो "नारो" भी उसके खूंटों में रहे। जब किसी वस्तु को वास्तविक रूप से परवेश प्रारंभ किया जायेगा तो उसके यथार्थता क्षणों का रूप छोटा रह जाता।

"नारो" का शब्द में भी यही हुआ। समाज ने अबतक उसको मान्यता को किस अध्यक्षता में बलात्कार धैर्य दिया था, अब इसे खिलाड़ी खोने का सुनहर काम हुआ। यह सामाजिक मामला सुमारे साहित्य में भी भरा और साहित्य-संकरी ने नारो-मान्यता का साहित्य में वर्णित किया।

नारो-मान्यता के दायामध्य रूप की अपरिवर्तन के बीच में ही मुक्त कर मानस के संरक्षण के लिए प्रचारित किया गया।

"वोरिन नहीं है रे नारो वह मी मानी को प्रतिष्ठित।
उसी पूरी स्वच्छन्द करी वह रह न रह पर आवश्यक।" पंत
कवि अपने खेल क्षण मात्र है जो बन्द करना यह नहीं हुआ। अनुभव उत्साह नारो के काम के पतन के लिए उसकी ही भूमिका ठहराया। महाकवि विदारके जो भी ऐसी ही महान कवि है, जिसकी आत्मा तारा के पतन स्थ

-------------------------------------------------------
1- "हिंदू तात्त्विकता: युग और प्रबुद्धियाँ" आधुनिक काल, पृ० ४४४
2- गुरु सुले ने विज्ञान कर दो, भाषा, मानस को भिन्नता,
वह निपुङ्क्त जाय, आजू बज़न।

dोरी संशोधकों आ तैरे संविदा मस्तक पर हैं,
अंदर कर दूसरीने जुख्त जा सजायुगों जा।
ले मान का निर्वाच वालिग।
3- "हिंदू-तात्त्विकता: युग और प्रबुद्धियाँ-आधुनिक काल,
pृ० ४४४
लैसनो लिया यह मन मैं सिवे प्रतिभा है,
रानो को यह दिन गोले रहने किया है।
श्रेया के राजा नामा करूँ यदि वोलूँ,
राजा-रानो को युग वै यही प्रश्न है।

नारो-भावना के हय पतन की देखरेख दिखाते हो देने मात्र हे हो शोभा नहीं हुए अपितु उनके उसे बाती वि मे दिया और उसके इस पतन को दूर कर उसे चर्चाहलक प्रदान करने के लिए भी प्रयत्न किया -

अकलप हो पर्याय बुद्धिमत्ता, यह मेरा वर्तमान।

भूमिधार की टंडने से फूले तेरे जरूर।

दिनकर जो समृद्धि काव्य में नारो-भावना का विकास को
हुप्प बुझा है -

व- शारीरिक पदार्थ
व- आध्यात्मिक पदा

नारो-भावना का चर्चालक किया जो के काव्य में शारीरिक
पदा वे देखकर आध्यात्मिक पदा तक सिक्का है। महाकवि ने नारो-भावना के
उच्चाब्रह्म वे मणिवत करने के लिए भारतीय प्रयास किया है। दिनकर जो
के उपूर्व काव्य पर विचार लोकण करने से पता चलता है कि जिन चर्चाहलक
नारो-भावना की आपने प्रदान किया उत्तरा जन्मक दुःख हो रहा। इस धार्
के आध्यात्मिक वितरण में हम क्या प्रयोग शारीरिक पदा को हो देखकर चलता है।

---------------------------------------------------------------------

१- रवीन्द्र - राजा-रानो नामों कविता (र०००), पृ २९
शारीरिक पदा:

नेहरु माता के रूप में :-

शारीरिक पदा है लैक्नारी के अवक विकसित रूप दिनकर जो के काव्य में मिलते है। यह प्रथम स्त्रीर भारी का ज्ञान इस जगत में प्रेम करतो है वो वह माता-पिता के पवित्र स्नेह को अर्थात् प्रतिपुरूष दोहा है। माता-पिता के दुःख को और नहीं होते। दिनकर जो पूर्व अनेकानेक व्रतृत्व को माता की उक्ति पवित्र स्थान नहीं दिया, कितना कि दिनकर जा ने प्रदानकिया है। बाल-विवाह को पुरा हमारे बनाज़ पर एक कलेक थे। तारा-बालका के एक पुत्र के रूप में उच्चारित पाने का उल्लंघन हो नहीं निकला था कि उसे एक दुर्भावना पत्नी के रूप में परिवर्तित कर दिया गया था। एक स्नातक बालिका के घर जा घरुण लाता था। दिनकर पूरा कविताय में हेडे आकर विद्वद्ध देखने की मिलते है।

दिनकर जो ने इतना बालिका की माता का शारीरिक वृंगार के विकासात्मक संबंध स्थापित न कराकर उसे प्राकृतिक शृंगारक मातानाथी से जोड़ दिया है। बालिका में इसे हो बालिका से संबंधित मातानाथी का चरमिकरण-संबंध काव्य माताना बालिका। जगन्नाथ कन्या वैचारी शारीरिक लौकिक संबंधों की बना जाने। ऐसी पुष्पकला कन्या के संबंध में शारीरिक स्तुति शृंगार की माता को झाँचने यात्राएं कवि भी माता-पाप से नहं बन सकते। दिनकर जो के बालिका-काव्य का उदाहरण स्तुति है -

'तु वह, रुककर अग्नि प्रमृति ने क्षत्रिय शृंगार, तु वह, जो धूसर में बाहु भूल रंग को यार।"

कविता कवि - पृष्ठ १७५
पाँच का ढोंढ दुलार, पिता को जो लगना भौलो,
से जागेगी चिंता को नाणा को भी बिगा को ढूँढ़ा जाएगा।

दिनकर जो का भौलो-भालोक्षण को देखकर प्रवृत्ति उसके ताथ
पहले को जो लक्ष्य हो जाता है। बरसात के पृथ्वी उसे देखकर हो सिलती है। अर्थ
उसके स्नेहका लोन्दीया ते प्रत्यय होकर हो फलते-फूलते है। वहीं दिनकर जो
ने नारों के शिशु रूप के वासिकान्ता ल्या, स्वीकार कर ली है।

विद्यान जैसे बालोका स्थूल रूप को जो पृथ्वी दृष्टि है देखने
का प्रयास किया करते हैं, जिससे भूलता था कोई महत्वपूर्ण बारोक तल
लुप्त न रह जाय। स्थूल दीन्द्रीय भी उसके अग्नि अच्छी बुझाकर लाता है
जबकि उसके अन्तर्गत प्यायत पृथ्वी लता को उभार उस प्राय वर दिया जाय।
यदि किव उसके कुपरी रूप-क्यून्दर्य पर ही मौलिक धोर उसके अन्तर्गत व्यापत
तलक तक नहीं पहुँच पाते है, तो वे निर्देश रूप से अफल किव नहीं लाये जाते,
भले हो समय को पुनातबात उस ताज वे बादर के भारत मान लिख जायं, परन्तु
उनका वह बादर स्थायी नहीं होता है। समय के परिवर्तन के गति में निर्देश
हो उनका कायम पृथ्वी हो जाता है जैसे उनके अग्नि अभार ही आबँझ शीत रह
जाता है। दिनकर जो का कायम निर्देश रूप है बादराय, मविष्या और
पुलकार के लिए एक आदर्श प्रेमिका है।

दिनकर जो का कायम का नारों का शिशु रूप उसके माता-पिता के
लौक का पात्र हा नहीं है, अपितु उसके समस्त पृथ्वी दुलार करतो है। वह
कैलासवाला हा माता-पिता को पुत्रा नहीं है, अपितु वह कैला पुत्रो-संबंध समस्त
पुश्ति है जोड़े पूर्ण है। वहीं दिनकर कायम का बारोका है जैसे यही उसका

र- रसवानन्द - बालीका ते वासू ताम्मी कविता ( २०००) पृष ६५
चरम विकास है।

दुतावशीय महिलों की पवित्र-भावना का विकास –

भाव-वसन का क़रा हो स्वच्छ आं पवित्र संबंध होता है। ओर कष्टों को उसकर चुप भो भाल कभी अन्य वहन पर दुलार करते हुए हर दशा उसका वसंत-वौचर बना, रहता है। वहन कितने भी भार की न बिघाते चुप करे भाई के लेख कृत्य सौकर रह जाते हैं। यह आवरण-विवोध भाव उसका पवित्रता है तथा दिनकर जो का कायम इसका चरम परिचित है।

दिनकर जो अभाई की महिला प्रेमिती पति का रूप धारण किया हुआ है। वह अन्य मायेकें रह रहा है और प्रियका उंगर मूंग है। स्वामासिक रूप से उन्हें विवाह बलात्पुर है। विवाही नायिका कीभांति जब वह वर्तमान तंदेह किसी दूता अभिवत लक्ष्य के हाथाँ नहीं निकलता, तब वह कोई वियोग-पत्रों ही प्रेमित करता है। वह इतना मौजूदा-मायात्मी बनता है कि फल अभ्यास में कोई नहीं बना कर भेजना आतांक धातों। वह यह अन्य वियोग अपने माई के स्वरूप रह देता है। फिलहाल पति का वाद में हानि होने का वियोग वह अन्य उहास विपिन भाव दिनकर जो सही प्रस्तुत किया है। का अन्य उहास विपिन है, तो का पूरा है उसे कि अपना वियोग-वंदेश किसी अन्य है अन्य है निकाले:-

"प्रदेशों को प्रिय छेते गाली यह विरह गीत उम्मन,
"भेजा, तनहना एक कलम तल माया बालम के लोग।
चाराई की लेय-कुरव माया ठंग मौर वियोग,
दुधिका में का जायगा, तलो, तुर्क उन्हें बुधाजनगार।"

१- कागज पर लिखत न बनाते, कहते विदेरे लेता।
कस्तूरी हिस्ट दीरे लिखौं, नै हिस्टी की बात।। विवाहों अंदाजें, ३००७
२- रैमुराक - कविता का पुकार (२० लीज) पृ ६.
जब मानना पवित्र है तो निश्चित रूप से उसे अपने भाई से कहा जा सकता है। दृष्टिगत भाव कभी नहीं भी किसी के साथ रहने का वास्तविक निश्चय नहीं होता। भाई-बहन के भावनाओं के पवित्र संबंध को दिनकर जो के कार्य का उत्कृष्ट रूप है। भाई-बहन के इन पवित्र संबंधों का निश्चित रूप बनाने-देने का नहीं मिलता।

पतितात्मक पत्नी की आदर्शीयता पुनःरुत्पात-भावना:

भारतीय समाज में पतितात्मक नाथिक के उत्कृष्ट विश्वसनीय को मिलते हैं। पार्श्वोत्तर, तीत बुझाया खान शोधता इसके मध्य रूप है। हमारे वैज्ञानिक में परिस्थितियों के समान मानने जाते हैं। सामाजिक वातावरण के हमारे पालन तात्त्विक की धारणा समाज देख का उद्भार्त होता है। महाकाव्य निर्देशों में यह आदर्श पूर्णतः विश्वसनीय है। उवरूपी कार्य की सुनिश्चित एक आदर्श पतिता नायकों है। को पति-पत्नी ज्ञातिक व्यवहार को तात्त्विक परिस्थिति मानता है। विश्वास नायिका चिन्ता देता है वातावरण करते समय सुनिश्चित भारतीय आदर्शी - अनुगंधित या समस्त चिस्ती लोककर स्वप्न कर देता है। विश्वास आदर्श के अनुगमन हेतु वे सुनिश्चित करता है। वह नारियों को पति-पत्नी की धर्मीय पारिक भाव के आशा के विरोध जानचरण करता है, निश्चितता के बाकी नहीं नारियों होता है। यद्यपि इस गृह देवता शक्ति वे निर्देश करता है। तथा पति-पत्नी तात्त्विक व्यवहार का चरमसूक्तेश्वरी देवता है। परंतु पतितात्मक पति-पत्नी के आदर्शी की भो उन्होंने तत्त्व-स्वप्न कर अनो
जीवन-यात्रा के पार्श्व पर चलना आवश्यक करतो है जैसे जीवन संस्कृति को उसे अन-शैक्षित के अनुसार अस्त जीवन व्यक्ति कर आध्यात्मिक लाभ उठाना है। यद्यपि भारतीय विवाहनायित्व के जीवन का आदर्श होता है, जैसे दिनकर जो के काल्याच्य मूर्तिक्रिया मिकास को प्राप्त करता है।

आदर्श पत्नियंत्रण हरे एवं पत्नीक्रिया पति दौड़े के जीवन श्रेष्ठ प्रकार माने गये हैं। जैसे एक बुद्धि का डाला पर दो फूल लिये गए हैं, जिनका उद्देश्य जीवन-परभूत को एक खुशरूप का पुरुष बनकर। सुवासित करना है।

दिनकर जो के आदर्श पत्नियंत्रण का यहो मूल संदेश अनुकूलणोग्य है :-

एक खुशरूप के उर्म मैं हम देखे का जाती है।
दो पुष्प एक हो वन्दन पर भोज लिये हुए हैं।
फिर रहन जाता मैं कहते खुशी वापस पावता है।
एक हम युगल, हरे हो अनंत वे दिहते हैं।
निम्नलिखित श्रेष्ठ पति विरिन्द श्रृंखला की,
एक नाथ पर चढ़े गए हम उद्धरण करते हैं।

अवसरों के द्वारा भुज्रिके के समय पुष्प - पुष्प का रूपान्तर करने के संबंध में वातावरणके जीवन की जान पत्नी सुक्ष्मता करने अनंत चारियों पत्नियंत्रण हूँ का बदला हो आध्यात्मिक व्यक्ति करता है। यह कहता है कि - यदि हमें एक पत्नी उत्ति का पालन करे धार्मिक व्यक्ति है।

आत्माओं के समय के केन्द्र स्थल मैं अद्यावधी पति श्रृंखला की है। वे तो युगल एवं भोज की पुष्पिक विजय को कहते एक ही पति है अद्यावधी पति है। भारतीय पुष्पिक ही पति है।

---------------------------------------------

1- उक्तिनी - चुहली एक, पु. २१७
पुलोर वहलिंग को असरहिन्दा होकर इन जोधन में सब कुछ प्राप्त हुआ है। उस्तराहूँ शहर बैठा उघर अरक पर नुःपारात्र ब्रह्म का उपभोग करते तिलक और भाग चकर काटने फिरते हैं। यह किम भारतीय संस्कृति में बुलित बना गया है। अल्लं: भारतीय नारा को एक ही पति में विश्वास कर पत्निता यही का पालन करना चाहिए।

पुलोर वहलिंग का मूल उद्देश्य बन्दानाट्रोत भी बोलेकर किया जाय, फिर भी पति प्रकट का फहू पराक्रम भी कम नहीं होता है। जब उर्वशी सुकुन्या के उमरा भरत के कारन दिन गये शाप को और संकेत करता है, तो सुकुन्या उसे बताता है कि पुत्र ते का मदह पति प्रकट का नहीं होता है। उर्वशी को भरत ने ये शाप दे दिया था कि वह अपने होणे में पुत्र बर्या पति दोनों के दर्शन एक साथ नहीं कर पाएगी। उर्वशी अपने पुत्र जाया को सुकुन्या के पास कोंडर कर पति सुकुन्या के तर पाया है। उर्वशी अपने पुत्र भरत है पति-पति यही उच्च स्थान दिया। फिर जो के काम से यह पति पत्निता नारा को भावना का परमार्जन दिया है।

उर्वशी का काम को उपनारिको आशोनारा भी पति पत्निता नारा के प्रतीक का उदाहरण है। उर्वशी के पति एक पति प्रकट को मारक, उर्वशी के बुप-लोकारं के गारह कर जाते हैं, तो ना वह अपने पति प्रकट के अवर का नहीं बूढ़ी है। उर्वशी का पति है कि विधाना चाहे उसपर धिरता हो खटन वे कृटन बहु त्या कर, परन्तु फिर वह अपने पति प्रकट का नहीं बूढ़ी है। वह अपने फा में बोलता है कि यह पति प्रकट का मूल लाग़ना छो या तो। उसके आस कर कर नहीं लागना, फिर जो जा चुपा राजा अपने

1- उर्वशी - पुलोर अंक, पृ १०९
2- जाही, पृ १२२
उदय के स्थानिक कर ताजोवन उनका ध्यान करती रहते।

वह पलित्व के अारा और बुझ्म ठारे जाने पर भों दिनकर जो को पलित-ता नारों, अन्य परमेश्वर के चरणाँ को को वनना उदय है चाहता है।

वह प्रत्येक सन्यास परिस्थिति में भों अन्य परमेश्वर को आराध्या है

विविध अंग-अंग बाँधने बिलो वन-वन में,
खोले, हुँ तौँ बौ रहो भरण पूजन में।
तै भो यह अरेरन विषाण राम निष्पूर हैं,
रामां, जनसो था जू र विश्वा सुप लन में।

उर्विकों की पक्षिमा नारी वौशालनरो अन्य पलित्व की वनना

अङ्गावत परमेश्वर मानकर करता है। उसको पक्षित चरण शोभा को है।

अङ्ग प्रकार दिवस बूटवाराको परमेश्वर की आराध्या में करता करीशा व्यक्तिवार

cर देता है, वहों स्नायुक वौशानरो को प्यारा है -

हर, कौन है कृत्य रिखै मै सर तक कर न उनहों ?
कौन पुष्प है कीह प्रणाली बैंड़ो पर भर न लाहों लों ?
प्रमु की शिखा नहाँ, रात तो पात न कोई शन है।

प्रमु व्यक्तिवार आराध्या करण पर अंधित, जन, प्रमु, जावन है।

-------------------------------------------------------------------------
1- और त्यागना हो गा तो जारी - जारी फ्रियलम नै
है लेते दंग नहाँ सत्स नां अन्तिम वार पूरा को ?
पुमे बुझ्म रिखा ध्यान खाना कैसे चला गये वे ?
अब मातू हो ए बैंड़े पर गहं कानन के मन हैं ? उर्विको - पपम एंक, पृ.००१५
2- सैयदा - राघ-रानो नामो अचॆता(२०लीला)पृ.०२२
3- उर्विक - दितीय एंक, पृ. २६-२७
दिनकर जो नै कपल प्रहार काव्य "उद्भवो" ने प्रकाश उद्भवो नायिका के चनन के भारतीयता में जीने वालों नायोनरा के चित्रक को विदेश प्रदान किया है। नायर के इस परीक्षण के रूप के और पुरुषता कवियों का आयन बहुत ही दर्शा गया था। दिनकर जो उसे चरण विदेश पर पुनः सुनाए दिया है।

दिनकर जो नै कपल नायर के संबंधित प्रश्न का प्रश्न पादरी नायर के उच्चवर्गीय का अवश्य और आदर्श व्यक्ति का पाली हुए हो क्यों करतो है, भले ही देता करने में उस देता की कोई कपड़ा और भाले पड़ती है। यदि उस प्रकार को देता पर उसे पत्द-परमाणुर बारा अन्य स्वामीपुराण वृत्तांत गाय के उस पत्थर का व्यवहार नाथी। इतने कादें उपजत विश्वास वाचनिक वेदान्तिक युग के बहे से देनकर दिनकर को उच्च विदेश पर देते के परमाणुर हा विदेश के बहे के ही व्यवहार दा है। इतने विदेश परारे के प्रश्न का व्याख्यान का एक व्यक्ति का हो।

पुरुषों नायिक का ही हंसना का श्रवण करे।
जो नै ताली रहो तत्स्थता लक युगला मे भरे।
पर, क्या आगे उल्ल कथा के नारे मे पुरुषों नायरो,
जो ताल यो व्यक्ति, तत्स्त ती रानी नकल शारीरो।

उद्भवो दिनकर जो नै कपल प्रहार के भरोसा का भरोसा कथित है।

1- उद्भवो - दिनकर ज़ाक, पृष्ट ३६
थोला का पुस्तक उठाकर प्रदर्शित किया है -

नूप हुए राम, तुमने विचारें मेला।
चो कौटी उन्हें प्रय। तुम वन गयां मेल।
वैदेहि, तुमहै माना क्षणिका प्रय है,
रानो कहणा का तुम भी विषय पहले।

रौ -रौ राजा का कोतिला पनपार्वी,
रानो, आमुह, हरे भे वन जाओ।
पुली सबसे, बालक, पत्म, रानो,
माँ के उर में दिघ रहते न गुल दिखलाओ।

पति के दरा पतिला नारा के प्रति फिरे उठे वाले वन-पार्वी के प्रति दिनकर जो ने वाला आपका प्रदर्शित किया है और इत मनाया का पतिला में हो केदारगृह में दिखाया है - उस मां के उर में दिघ रहते न गुल दिखलाओ। भैले ही वह वनद्रश आधुनिक यूम की मांग के लैंग-पत्रे है मैं न सावता ही परितृ भारतीय बंडूक के हाथ निकाल जाता है। इस सुन्नत वर्ग में चार चक्कर रोलकूलः पतिला नारा मुख- दुःख का चरम वामान करता रहता है जबसुन पतीभा नियालि न पति ने को परमेश्वर को मानने का भाव उजाल हो दिखता है। इस विचार वारा का प्रभुत्व कर्ण निकरे जो के शुकुरी हों उत्सेंगी है -

पति के दिघ योशिला का कोई बाहर नहीं है।

अब तक है वह देह, नारायणः क्या कहें तोमर्रो?
अधूर १८ यां इंदुमारे, फिर इंदु-इंदु रोमे।

---

1- रैणुका - राजा-रानो (रॖलो) पृ २२
2- उवीदी - मिताय अंश, पृ ३६
पतिता नारी के संबंधित पांच प्रसंस्करण के प्रति यह उच्च आदरण। भाषा के कुछ लोग उसका नामित हो नामित होता है, लेकिन पुरुषत्व पूर्व लोक में यह नामित होता है, तो उच्चता के अनुसार उस पुरुषत्व के प्रति विग्रह का नाम नारी के लोक में उद्धृत होने लगता है। यह लोक का विकास भी उद्धृत हो बदल नहीं होता। अन्योन्यों का नामित हो वह पति-विग्रह है प्रज्वलित हो जाता है। यहां पति-विग्रह का यह फलक उज्जीव है भारतीय संस्कृति में वही वास्तव नामित को और संभूत करता है।

जब ताप्त से वच्छ उद्धृत को न रूब भी रूब था, नूप पुरुषत्व वे नित्री वह अन्य सिद्ध थी।
कहते थे, "यानी आत्र काम का अंक नहीं पाएगी, तो राजा को चौड़ सत्ता है विशिष्ट भित्र बाँधी गयी।'

कादर व्यवस्थानी का यह सबों कि वह अन्य पति लोग प्रति व्यवस्था का एक स्वीकार में उच्चारण न करते। वही ही पति उनके प्रति वह शरी कुछ भी व्यवस्थार करे, उसे पति नहीं प्रश्न करता है तात्कालिकता करे, नहीं पतिता नारी का मानना किया। दिल्ली घो ज्ञान हिन्दू अध्यायों की मानना करे। पति-विग्रह का अचार अचारों का भारतीय पुरुषत्व के प्रति एक मो शुभ रेखा नहीं उल्लासित, जो कि उनके आपर का परीक्षण भलों परिवर्तित है उसे। यही विचार का भार होता है।
किस प्रकार रहे एक मटक अपने पुरुषों नाम के प्रति रखता मानता है, किसी परिवर्तित है, बुद्ध जन्म भारता के प्रति अपने में रों भी नहीं समझता है, ठाक पैदा हो नाम निर्भर बोधित नहीं ।
महाराज किसी उदाहर, कितने पृथ, भाव-प्रवण कै है,
मुख अभागिनों को उनके किलान सम्पान दिया था।
पर चलने के समय अनो क्या मृत गये हैं?
राहा नहीं क्या आता, दानवाहृति इस बड़े भान में।

दिनार जो ने पतिता नारों को इस पुनर्द भावनाहौं जितना
निकार प्रदान किया है, उत्तर धुःसितों कवि उस रूप में न दे सके। अपने
इस पति को दूर लेना माया मिनुक्ता और आदर के दर्शन दिनार जी को पति-
दुरा खर निर्विंयकता हायका ही करती है। पुरुषा के लघु देने पर वह
ईश्वर है उसे परिवहण से निले का विनय नहीं करती है। वह आजोबन
करने उसे दूर परात्त्वा को जारी करा उत्प्रेरण इत्यादि जुई है। वह
परात्त्वा के के लेने हत्तो हाय भोज मायोतो है अ कुछ परिन्द वहाँ ना रहे,
किसे परिन्द भी रहे, बुद्धि रहे। उन्हें दाना मात्र के लिख भाय कोई कब्ज न
हो।

मूल गये क्या दिखा, सूच, उस नोखा, निम्न निला है,
वैछो है कोई अस्ति इतः हो निलाशाहन में,
अभिनवो मास्टों हेक ही भोज तीला-दाना है।
क्या पर भी मृत अक्षयवाण हो प्रभाव, क्यों त्वारपाका,
जो भी हो वापस, मुखे दो, मै ध्वनि वह झूँगी,
दैद, कितने, मत युआनुं पुखलक कटक मो धूँपतम को।

-------------
1- उत्तरो - पुस्तक अ, पृष्ठ ३५।
2- वहा, पृष्ठ ३५।
पुज्य माता को वात्‌क्षर्यों भावना का चर्चा।

हिन्दू-वास्तविक वैधपत्र नै। अपि सत्संविधाय वात्संविधाय यो मानसका माता की सुनह आबाद योण दिया गया है। वात्संविधाय मानस के जावन मै वै अवेलका व्याख्या वर्ग कर्मा मनो मनता करता है, यह अन्य कोई नहीं कर पाता। यथापि माता-पिता दौर के हो त्याग महान है, परन्तु निष्पादनेभु रूप है वह स्वच्छकार किया जा चुका है कि गुप्त के वात्संविधाय त्याग व्रता का होता है, उस्ता पिता का भा नहीं। महाकवि दिनकर जी का काव्य हस्तका पुस्तक प्रवाण है।

वह युक्त तो, पुज्य वृष्टि नै क्या है भाग पृष्ण का?

यह तौ नारी हो है जो सब यत् पृष्ण करता है।

उत्त-वाम अपमो अंग, अन्तिक अंग मना है,

बॉर वहा विशु कौ से जाती, पन के उच्च निख नै,

जहाँ निरामय। लुध का है, यन के कूला का।

भले हो नारी का। युक्त उद्देस्य कामिक प्रेम-वृष्टि श्रेय है वन्तवति वातास्तने न होता है, परन्तु यह निष्पादन व्रत्त है कि जब कोई भी नारी वात्संविधाय पुनरात्मा माता का रूप धारण कर बैठता है, तव उसके बमका दुःशान्तिक प्रेम वृष्टि का कोई पहलव नहीं रह जाता है, यहें नारी-मातवा का चर्चा। संविधाय इत्या मनिष्ठ है कि वात्संविधाय दुःशान्ति पर विवक्ष पा जाता है।

जब नारी एक प्रेमालो पत्नी के रूप मै होता है, तब उसके बमका दुःशान्तिक मातवा बालू हो जाता है, परन्तु उसे हो वह रंग माता का रूप धारण कर लेता है तव वह वात्संविधाय रंग का संवधा कर जाता है और उसमे दुःशान्ति पुस्त हो जाता है। दिनकर जी ने इस लूक नै पुष्टि के इस काव्य

---

१- उल्लेख - चुप्पी कंक, पुरु ११७
मैं बड़े हो गुँदर टंग यह मैं चित्रित कौं है। यहाँ नारों के वाल्सवा भावना के निमित्त को बुझे चर्चा होना है।

उद्योगकर्म के प्रथम वर्ष में कुछ अपनारंग हड़ताल के अवसर होते हैं एवं वे लौकिक जाने को नारियाँ के विभिन्न दिशाओं चर्चा चलाता है। रंगों का अच्छा पूर्वों पर निकाल लेने वाले नारियाँ के जानता को वहाँ लिके अवसर पता लो। कारण वहाँ प्रेम-भावना के विशेष वन्नतियों संचालन करना पूरा है। यह संचालन नारा के फूल और कुलदार खंड वीदेशी शरीर का बड़ा हो दबाव देश पृष्ठ नहीं है। दिशा के लाल-पाला में नारों की वस्तुओं की धमकी व्यक्ति रहना बहुत हृदय अत्यधिक है और प्रेम भर्ति को भावना है। नारों में पूरा प्रायः ही नहीं है, ली उसे नारुल रूप के लिए काम लाभ के लिए प्रतिकृतियों करवाने के लिए। एक जना नारा के उद्देश्य दिखाते हैं, जैसे कि यह अपना को विधायी धर्म संक्षेप निर्दिष्ट किया गया है। वर्षों दिशा के विश्व संचालन में एक नारा मां को अजीबों का अपना करना पड़ता है, परन्तु फिर भी उपाय जैसे एक जनाओं का किसी ध्वनि स्थान माना गया है, यह बिचार देश परिचय नहीं है। प्रत्येक नारा यदि अपने तांत्रिक रूप शोभत्व के मोह को लाभ में संचालन संचालन से पृथग संयोग करने लगता है तो यह विश्व ही एक दिन पृथग हो जाता है, फिर सोशाल वृत्तत हो जाता है और वाली वर्ण वन्नति जन्म के पृथग करने वाले नारों का अवस्थित क्या पृथग होताँ?
पाता के महत्व की भी मूल सही है।

दिनकर जो के काय्य के कुछ परवर चिन्तानु रंभा नायिका का मातृत्व विरोध से विषाक्त माता को छ फड़कर दिनकर जो का आरोपन कर के है, ऐसा प्रतिक्रिया होता है कि उन्होंने यह बचाव नहीं डाला कि दिनकर जो का आलमारा माता का विरोध करने वाले इन्हीं नायिका की विवास नहीं करता और अंिथू वे पूज्य माता का सम्बन्ध करने वाले मैत्रा नायिका के साथ है। रंभा का प्रयाग तो दिनकर जो ने केवल दल कारण उठाया है कि प्रथम वातावरण रात को जोग देने वालों मां के पूज्य रूप को घुसित बलाया जाय और ऐसा वातावरण उत्पन्न करते किर त्याग को प्रतिष्ठा माता के गुणों का वरण करके उसके वैद्य रूप को प्रतिष्ठा को जाय। हिंदू-वातावरण दो नौ, अंिथू विष्णु-वातावरण में ऐसा कौन का वातावरण-कार होगा कितने माता के भव्य रूप की भलाई का हो। यह यह आश्चर्य।

-----------------------------

1- पुजारी हों, चिन्ह को गायदो मै लहानायेंगो,
    पदिर तान को ब्रह्म सिंह से हो लोरो गायेंगो।
    पछैंगो कुंबु जो हार है प्राण-प्राण गोलो-गोलो,
    नह लायेंगो मुहुष्य है देह करेंगो हीलो।

उद्धरण - प्रथम अंक। पृ० १६

1- पर राम्य, ज्या कभी वात यह मां मत जाता है,
    मां बनते हा किया कहं ते कहं पूर्ण जातो है?
    गली है इतिहार, अत्य ये है, गठन देह को लौकर,
    पर, हो जाता वह अधों कितनी कपलिनो होकर?

उद्धरण - प्रथमकंक। पृ० १६
मानता पँगा कि दिनकर जो ने अन्य काव्य के पृथ्वी पाता के त्याग को जो उराहना को है, वह विचार भी काव्य है जस पहल कहीं नहीं रहता है।

औँक नारियाँ का यह वत है कि जीता मौता नारिया का बलता है। कि नारों सिक्का की वजन दैक, अन्य आरोही वौन्दर्य को लो बठता है। यह नारो-मानवा का अप्लास है, नारों के स्थूल माति-वौन्दर्य को पश्चापालिनी नारिया की दृष्टिक भावना है। यदि वास्तव रूप से यह देखा जाय कि नारों के रूपारों एवं काम वौन्दर्य का क्षा महल है? तो पता चलेगा कि यह स्थूल वौन्दर्य तो शारीरिक है। यदि ज्ञात रूप में महत्वपूर्ण धूप एवं अलोकित वौन्दर्य के दर्श करने हैं, तो नारो के अन्यता वे बेठे पाता रूप के वौन्दर्य के दर्श को किसः महाकाव्य दिनकर जो की रचिता का यह धन ठार क्षेत्र है। उनके अंगार नारो-भावना के मातृत्व रूप में जो वौन्दर्य निखार करता है, वह नारो के प्रेमिका का यह नहार करता। अधौरलिंग कविता में पाता के अन्यत्व वौन्दर्य को जल्दी वराहना को गह है।

युवा जनो को देव सादिमि कैसें पत्ता जाता है।
रूपमाति लो जो पुष्प है वो वहों क्रिया लगता है।
जो गोदा है लिख जाओ मुख सिंह का मुखा रखें हो,
क्या हो रूपमाति पुत्र का पता कला रखें हो।

दिनकर जो का असल काव्य पत्र के पुनोत्त त्याग का कट्टर सक्षम है। अनेक पुत्र को अन्य किंभा भी राधा दुःख है आक्ष नहा देख उठती है।
मति तो उसके त्याग हो रही है निकल जिंद, वह पुत्र के लिए अपमानीत त्याग करता है। एक्षण असल राधा-काव्य तो बौद्ध के मरत-वास्तुत्य का हो कारण है।

-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------
1- उर्जा - प्रथम संख्या, पृष्ठ १६
पुनः के लिः दिनकर-काव्य की मां वे संक्रिन्त्व वातस्लयम्
टोष, संयत्प्राप्तं उल्लेखनीय है -

विवश दैत्यो मां, अंबल तै नन्तों जान कुच उड़ जातों
अपना रक्त, दिलसे दैत्य यदि फटती जात वम् का काटों।
क्षर-क्षर मे अनुचकारी की भूट छूटी रौमते हैं
दूध-दूधः की कंधन कंध पर चारी रात लदा होते हैं।

दिनकर जा ने अघर काव्य मे यथायत नाराय - भावना के अनेक
रूप चित्रित किह है, परन्तु उन अभोगीयम् जितना महान उपकार पृथ्वी का का
र्तं बलच का जलायत है उनना उन्न रूप का नहीं। दिनकर जो के कान्ने
यहा महात्तमत है और यहो उनके विकास का महान उत्कण्ठ है। दिनकर जा
ने माता के प्रस महान त्यान के प्रभुर जना महत्त्व पूकाता है। भले हो
उनके उदभोग चैं प्रस्त जात मे नारी कोही तानताक भावना का चरम विकास
शिखा ने का सफल प्रयत्न किया है, परन्तु वाह के त्यान और वातस्लय का हो
यह कारण है कि वे माता के महान रूप के प्रतिपादक को भी मूल नर्म पाया है
। दिनकर-काव्य का यह वक्तै नहीं चित्रित किया है कि प्रत्येक काव्य प्रस म
कहा न कहा उनके नारो-उदभोग जात लिखा है, और रूप उदभोग मां वे कहा
मो नारो के मां रूप को प्रतिपादक श्रद्धा को कां पूल पाया है -

तुम, भी माता, बना
और उसी का
रूप घर कर आया था।

तुम रघु का जै कहा है,
उठे गाल ते भुकाता है।
कृत्तिका मै तुम्हारे लायने
महत्त्व पूकाता है।

1-हुकारे - हााहारकार नामक कविता (२०लौट) पृ० ३४
2-हुकारे की श्रीराम, कृत्तिका-आपने नामक कविता (२०लौट) पृ० ३४६
कुलो के परित्याग पुनः कर्ण में अनो नार के लन-पान के प्रति खिलना टीवस खंड कृष्ण पाषाण रहो है। मैं उसके वधारे में उसका परित्याग कर उसे जाते में प्रशंसित कर दिखा था, परन्तु फिर भी वह मार के उदर था वहन करने के उपकार को नहीं मुक्त-ता है क्योंकि उसके उमरा। उसकी लालस- पालन करने वालों मार राजाको बाजा का पालन नहीं कर जाता, परन्तु फिर भी मार कुलो के पालन के प्रति उससे जूटी लालस दिनकर जो ने विचित्र को है -

मार का पय भो न फिया में ने, उत्ते, अभिमान किया में ने।

महाकाव्य दिनकर ने रामरथी का काव्य में कर्ण-कुलो संबंध में माता के महान लयां और व्यक्ति का बुद्धि हो कम्प्ली चित्रण किया है। कर्ण का एक जन्म दैत्य वाला मार कुलो की मातवना बलात उसके पुनः-पुनः की लक्षिका रही है और इससे और उसकी लालस-पालन करने वाला मार राजा का लयां बादाम शुभ ने उसके बुद्धि में उठा है । कर्ण करै? कुलो की महत्व दे कविता राजा की। उसके मनमाद विकट समस्या बुद्धि हो जाता है। विद्वस्त कवि दिनकर जो ने यह समस्या का उपाधि किया है। कर्ण पुनः के दोनों हो मातबाई का सम्पन्न दिनकर जो ने अपनाकाव्य में कर्ण के करवाया है। भला कर्ण का क्रमांक कि केवल यह माता के सम्पन्न को रहा न न कर उन्हे। महा कवि ने वातनको को मूर्खियों प्रति प्रतिपाद कुलो के मार शुभ को प्रतिपाद में भी कल्पन लौट दी है। जब कुलो हताश हो जाता है तो कर्ण के पन में देखने को लाते है। उसके सन्तता राजा के सम्पन्न को समस्या था, क्योंकि वह मार पाण्डवों तहरों, उस वह पाण्डवों जाना स्वाभाव नहीं करता।

1- रामरथी - कर्ण-कुलो संबंध (२००० पृ ६६)
2- कुलो ने केवल जन्म दिया।

राजा के मार का क्रम प्रकार।

रामरथी - कर्ण-कुलो संबंध (२००० पृ ६६)
परन्तु कुट्टों का को प्रस्तुत करने के लिए कितना बुद्धि उपयोग देता है -

जोते जो भी यह वि मेल ० हुए मारो,
लेकिन ही को वा, अंतिम विकास तुम्हारी,
रण में पर कर जो भी हांग वहाँ,
पाँच के पाँच को पाँच किस्तु रहै।

करा विषय कर निकल आर वि मारे है,
या विकले वोर गति पुढ़े पाँच के कर है,
तुम हसो तरह गानी को की रहौगो,
पुत्रियों पाँच पुत्रों को की रहौगो।

"पुत्र कुट्टा हो उकता है, परन्तु माता कम तकावा नहीं हो सकती।" 
का नारो-भावना का गुण गुण भाव दिसकर-शारिरिक मैं मिलता है। तब जो को 
लोक-लवण के भा वे मध्य हो कुट्टों ने अभ्यास पुढ़े का परित्याग कर दिया 
था, परन्तु उस्के जातना कर के प्रति चित्रण था। नहीं। ऐसा मैं नहीं 
कর सकता। उसे क्षेत्र वातावरण के खंड से जोखिम निकला और राधा 
ने उसके तलात-पालत किया स्वयं कुट्टा उसके मिले के लिए गई तो उसके 
वातावरण में कर को अभ्यास में भरने के लिए कितना आकुलता थी, इसके चित्रण 
मैं दिनकर जो का पुढ़े तक लता ग्राम पूरा है।

दिनकर जो नारो-भावना के पाँच कावि थे। उन्होंने नारो-भावना 
का कितना गहन अभ्यास किया, उस पाठक जों को आर्च दिया है। कहाँ- 
कहाँ पर नारो-भावना के चित्रण ने का क्षय नारो ही बन जाते है। कुट्टो 
के मातृत्व में पुढ़े कर के लिए कितना आकुलता है उसे देखकर पता चलता है कि 
दिनकर जी का वातना ना कुट्टी मैं केन्द्रक तकार हो गई है।

----------------------------------------------------------------------------

१- रामसरी - कर तकने कविता ((रिलॉ) पृष्ठ २००
हुत को शौक भी देल नौद मैं कुत्ता।
कुत्ता छाणा भर को क्षा वैदना मूलो।
पर कर मुलतः-पय जै निष्क क्षा नयन को।
वह झड़ी बोलता रहो पुत्र के लन को।

कुत्ता जब जीविका प्राप्तपीठता के करते-करते चक गाता है और कर्ण पात्रताः भी सम्प्रभुत होने के लिए तैयार नहीं होता है, तो वह छाणा भर के लिए भी अपने पुत्र कर्ण जै झोपित नहीं होता है, त्या न उसके भविष्य के तब्ज्ञ-च में कोई कुष्ठापणा नहीं करता है। माता को वाल्लक्ष्मयों भावना का यहो भव्य रविवकास या अपने पुत्र के लिए कुमाता नहीं करता।
कर्ण पूल हो कुत्ता का लप्पा धारण कर लेरनु माता कुत्ता कर्ण में फिर भी अपने पुत्र के लिए कुमाता नहीं करता।
कर्ण है भार उसके प्राप्तपीठता दर्शाये जाने पर भी कुत्ता होणे वालों का निरंतर है।
कर्ण का आरिहत उसे ही निि है परिस्थिति का श्वासकार नहीं है।
यहो है माता का चारण वातावरण और यहो है उसके उत्ता प्रवृत्ति भावना। माता के दर्शाये परिस्थिति में पुत्र के लिए वातावरण हो के, वह रणाञ्जियों का लप्पा चाहे जिसके लिए धारण कर सके परन्तु पुत्र के लिए देखा नहीं कर अक्षत है।
दिनकुर जै के कायम में चिन्तित माता की यहो विशेषताः है कि उसके वातावरण में फिर हो द्रासत नहीं होता जबकि कार में प्राप्त होता रहता है।
अतः अतः कुत्ता पुत्र कर्ण के दर्शाये निया या नारी-भावना का वरदान वातस्त्त में स्तुत्य है -

फिर भी तु जोता रहै न कपड़ा गाने,
सवार कियो दिन तुम्हें पुत्र, पवाराने।
जब जाय दांडाभर ते कुम्में अंद नं भरूं दे,
वासियो बार तेरा आसानिया कर दे।

1- रतिमहो - कर्ण-कुर्म जंगल (३० लोग) पूजा १४४
2- वशो, पूजा २०५
बास्तर मैं शाही के वर्धान के ४५० शक्ति शक्ति है। यह की यह वर्धान-
मय भावना पूरे मार्ग में आश्वासन निभाता बना देता है। माता का यह
स्नेह पुत्र हृदया भावना को आश्वासन फूले-फलाये, वह स्नेह का चरम विकाश है।
दिनकर कुपवाय को विविध दुःख वाला का पुष्ट धर्म है कि राष्ट्र कवि की
अनेक महान-भावनाओं में जितना विकास मातृत्व भावना को मिला अन्य की
नहीं। उनका लाभ वस्तुपाती कविताएँ भावना के गृह-धर्म-संबंध यथा वेदार्थों
के पूर्ण-मूर्ति प्रतिष्ठा करते हैं। कि बहुत, दिनकर जीने माता के पूरे वर्धान
में जो शक्ति माता है, वह अनेक योद्धाओं के ती-ती सप्ताहों में नहीं।
माता का दूध जितना विकास अथवा वर्धान-पद्धति है कन्या वृद्धि नहीं।
माता का दूध तो वास्तविक ज्ञान है। इसे योगदान माता अपर ही जाता है।

दिनकर जी राष्ट्र कवि थे। उनकी अपने समस्त काव्य का राष्ट्र
वैद्य न हो उन्मानित कर दिया है। यहम भारत माता के धूप भावना की
क्षेत्र एक अमृत भूमिकाद दो तो वे सदा सत्य। माता की इसे धूप गाय। नारायण
अक्षाकोठे-जाति देवता हैं उनके प्रसंग अन्यत्व भावना को अपने काव्य में स्थान देकर भी वे
अपने वात्सल्य-प्रयोगों की भावना की जो चरम विकाश कर सके, वह अगे आने
वाले गुण-गुरु के मन-स्थानों में देखी स्वयं नहीं को वास्तविक मूर्ति
को वाकार धारा देता रहेंगे।

नारायण का प्रातुल्य पूर्ण माता अन्य पुत्र के प्रति जितने कष्टों का
वहन करते हैं, इसका गुण-गुरु दिनकर-वाहित्य हो नहीं अपितु मूर्ति
विश्व-वाहित्य में मिलता है। परंतु इस भावना का जो मूल धर्म दिनकर

---------------------------------------------------------------
1- मातृ जाति का यही धूप वर्धान, नया है,
अभी, वे क्या अपने पिला देता है।
दृष्टि माता है भर दैवतों कर्तार सीहर मैं,
भरतो भूल कितना को दैवती स्नेह जिता देता है।
‘ क्रोयला जी पर कवित्त ‘ (१०००) मूल ३४२
जो ते अपने काण्य मैं चित्रित किया है, वह कौशल धरातलीय रूप। तपस्या और ल्याग का परिपुर्ण अर्थ कहा देखा हो, तो माता मैं देखौं। यहो दिनकर जी के वालय यापूर्ण चार उर्च्च हैं। मानन सर्वनाम है जितना योग-दान विधाता का है, उसमें मां कहै कर जन्म देने वालो मां का है। विधाता को वृजस्वित संबंधित एक कल्याण मात्र होता है, परन्तु यह कल्याण मात्र के शारीरिक रूप के अन्य सर्वज्ञात नहीं हो पाता है। ज्ञात विधाता के मीनी-वृजस्वित संबंधान में मां का अध्ययन कीया पड़ता है और वह योगदान में मां कीना कष्ट अर्पण करते हैं, उससे उज्ज्वल होता। मानव भाषा में ज्ञान धारण करके महान तपस्या अभ्यस्त करते हुए भी मां के कण मैं पुकार नहीं हो सकता है।

माता को स्वेच्छा परिपुर्ण मात्रा जब पुन ती को अर्थ अंक में स्थान देता है तो पुनि को अल्पशिक परिपुर्ण का संकुच होता है।। जनन को गौर के बुल के सकार बंदव के सभी बुल के पड़ता है। माता को गौर के बुल के साने स्वयं का बुल तो केवल कल्याण मात्र हीर हो जाता है। कण जब कुप्रात द्वारा उत्पन्न की अवस्था का विवेक कर दिया जाता है और राठा उड़ा उल्लास-प्रकाश करते हैं।। दिनकर जी के काण्य को यहो उद्वेद कहै विशेषता है कि वे नारी संबंधित उपर्युक्त वर्णों में माता को मूर्ति अर्थ वेदांतम भाषा को अन्य उद्भव स्थान देते हैं। कण के शब्दात्मक मां के अंकल के बुल का वोनदेर वर्णनात्मक है –

उस समय पुकारण लाते करके, अंकल के तले किम्बा करके,
बुलणे के कौन पुष्पे वर्तर, ताड़ता-ताप देतो थी हर्व?
राठा की बीड़ मंदी लिसकी?
जनन है वर्षी, तेज़ लिसकी?

1- जिन्होंने वह वालना पालतू किया भविष्य भग्ना का अर्थ?
कह सकता है कौन पूणी मध्यम इस तरल रत्न की?
उपर्युक्त - चुड़ीं झंड, पू १९६।
2- राशिस्थान - जुलौयं झंड, पू २७।
कुछ विचार जालोचक यहाँ वह प्रश्न उठा सकते हैं कि कुली जी तो कर्म को यां वो थे, यदि भाजा को भवाना जीत फहान वंद पुत्र के तुरंत 
कुछ कर्म बनाने वाली होती है तो कर्म की अपने पुत्र के अंश में समाध 
के समय कर्म नहीं लाता उनके पार्टनर का दूसरे लोग में नबन कर्म की कि ? जो कुछ भी कुली ने किया उसके लिए कुली हो उद्दार्थियों 
थे, इस कर्म का फल कर्म की कर्म भावना पड़ा ? प्रश्न ने दिनकर जी का 
हुदू-धर्म अध्ययन करने का किया होगा । दिनकर जी ने यां का पाश्चात्य भावना 
की नाम सोमा तक विकटत करने के लिए इसका उपयोग किया है । इस 
संसार मन्त्र का समाज व्यवसित है । अन्य द्वारा इस विषय में जोता रहने के लिए 
समाज के नियम का उल्लम्ब नहीं कर उठाने के लिए यह वह द्वारा व्यवसित है । कर्म कारी कन्या कुली के उदर से उत्पत्ति हुआ था । समाज में कारी 
कन्यार्ज दो व्यक्ति भी संबंधित वर्ग कार्यक्रम गुस्तक का आजा नहीं होती, 
तो इस समाज के प्रयत्न से उसे कर्म को लिखना पड़ा । यह कुली का विवलता 
थे, उसने कर्म का दूसरे से परिवर्तन नहीं किया । दिनकर जी ने अपने 
कविताय माता कुली को पातल्ल भावना को उज्ज्वल कर्म की गुस्तक वे 
उपक हस्ताक्षर को उठाया है । कुली माता का इस केलेक श्रृंखला कर्म के संयम 
प्रकट करते हैं । इस संसार में नारी बड़ा बड़ा होता है । वह समाज के 
प्रयत्न थे उस धर्म के कार्यक्रम रहते है । अन्य दरार की इन मूल का नारी को बड़ा 
हो प्रथम प्रारम्भित करना पड़ता है । उसे तो उसे और इस पुत्र का लिखना 
करना पड़ा, अन्यथा वह ऐसा कर्म भी नहीं करेंगे ।

8- कैरा धरते वर बड़ा दोन है नारी,
   कराला होतो अच्छा पारिशिष्टिक कुमारे कर।
   है कठिन वन्द करना समाज के मूल की,
   विर उठा न पर उक्ती पारिता निज नूल को।
   "रसिमरो" पंचम चर, पृष्ट 70
अपने पुत्र के प्रति यदि कोईभांति का कार्य कर दे तो यह उसके
लिए आजीवन वास्तव में रखता है। पुत्र चाहे करने का कोई प्रति अकुल हो
जाय परन्तु कुलता मां उस पुत्र के प्रति भक्ति करने वाले की कभी नहीं मूल्यता।
दिन कर जो कुलता इस कुलता के अपारशक्ति को भी दिलाते है। वह
कर्म है उसकी पालन-पूर्णता करने वाले मां राधा के प्रति भी कुलता का
साधन करते है। आजीवन राधा की चरण-वन्दना करना स्वाक्षर करता
है। इसी बड़े कुलता को माता दिनकर जो ने प्रस्तुत को है, यदि इसी
माता का विश्व के समस्त प्राणों स्वाक्षर कर ले, तो निरस्त तोप है यह
पुष्कर स्वरूप ही बन जायेंगे। कुलता की कुलता पूर्ण साधन अनुकरणोत्तर हैं।

संयोग, कृपाली है तुम्हारे पाला,
उन दयास्वरूप पर तनिक न मुझे क्षताता।
ले चल, मैं उनके दोनों पांच रंगों,
आज आ तर छोड़ अंत मंगो।

जन्म कैसे के समय माता की क्या दिखती होती हैं? वह ही कि
प्रकार आश्रय और अवतार होता हैं? उसे विश्व मैं सहायक के रूप में वह
पूर्ण कौन निकलता है? केवल मां जो उसकी कृपा मैं सहायता कर पालन-पूर्णता
कर उसे जीवन दान देता है। यहीं विधाता के रूप में मां का ही स्थान होता
है। दिनकर जो मां के आत्मा भरे माता दया मातृत्व संबंध माता विचारों की
स्थान दे रहे है। मां के वह व्यस्त को उच्च कोटि की माता दिनकर जो के
अभूर्त में ही दर्शन है।

तब विविध यात्रा मुख्य जन्म पाता है,
भरते पर शिशु मूला-प्यास बाता है।
पां वहां स्नेह है जो प्रेमित कुला कर,
पुष्कर पान बराती उर है उसे लगा कर।
पुष्कर शुष्क जन्म को क्षीतिज शरण करती है
इन्हे निम्नांक जै में अभूर्त भरते है।

---
9- राशिमरणो - फलमृत उपन्यास, पृष्ठ ७०
निषिद्ध हृद तै बिनकरो जै काव्य मैं तां करावता की उल्लास \nहो उज्ज्वल बनाने का प्रयत्न किया गया है किन्तू ऐक महान कवि को \nkरना चाहिए।

उव्वेशो-पुत्र बायु माता की मात्स्यन्य स्थान की उत्साहक रूप \nप्रतिष्ठित करने के लिए माता उव्वेशो एवं कृष्ण पल्लो धूमक्ष्या के \nमुद्री- \nपीरा प्रष्टता करता है। यह अपनी उव्वेशो वाणी पुत्र बायु को जन्म देकर हो \nअपने पति धूमक्ष्या के साथ बन जातो है एवं बायु का लाल-पालल कृष्ण \npल्लो धूमक्ष्या करता है। धूमक्ष्या के स्नेह वे पल्लो हुआ है तथा उव्वेशो \nने उसकी उल्लास्कार करने उड़ के दौड़ता है, जब वह नारो को स्नेह एवं \nवाताल्यस्की भावना के प्रभावित होकर माता को स्नेह क्यों भावना को \nअनुम तुल्य बताता है।

दिनकर जो अमल काव्य के धूमक्ष्या नारो के मात्स्यन्य रूप में घो \nक्रेन्ट्रीपुत्र शमकर है। उव्वेशो-पुत्र मायु मां के चरणराय का तेवर यह दिखा तुल ता का \nअच्छा करता है, वह तुल राज-पुलक के धारण करने पर भो भुपल्लब है।

दिनकर जो ये अपने काव्य में माता के महान वाताल्यस्क, स्नेहस्य \nएवं मातापूर्ण रूप का चरण विकास प्रकाशाया है।

------------------------

1- मां, हताश मत हौ, भवंतिष्य वह चाहे कहीं शिखा हो, \nमें जाया हूं अधुकं बन उससे स्वर्ण जीवा करा। \nकिया हूँया हो नहीं ज्ञान, एं कहरामायेहो किया के, \nलोगोंके लिये कल्यान ताक में पल कर बढ़ा हुआ हूं। \nउव्वेशो - पंचम अंक, पृ० १६४।

2- हो कुछ मिला, माता-पमिता है, मां के बुजल छत्त, है \npिला नहीं, में नै जानव में मातारें देलो है। \nउव्वेशो - पंचम अंक, पृ० १६४।
दिनकार-काव्य को नारो में उपाधिकारा की आनन्द-भावना:

प्राणो मात्र को शेष करना लम्बे भारतवर्ष की महान उद्देश्य रहा है। इन भारतवर्षी यात्रा में पूरा-पूरा आस्था रखते हैं। जनवर है कुं कर बंधार में कोई दुःख कर नहीं है। गोस्वामी जी अंडा भवान के प्राणियों को शेष करना को और दुःख के कष्ट के लिए कहने की कारण करने के जब वर्चू को दिखाएगा। वास्तव में किसी और जीने का (शिव पेड़ दिखा) से कुं कर कौन कर बने जन के व्यक्ति नहीं है।

परामर्श दिनका जो राजस्थान का सम्प्रभुत पवित्र है उनके पृथक राजस्थान का लोग भवान को भावना के मूड गवराह तक व्यक्ति होता है। यहां वात दिनका जा के संबंध में भी ठोक बैठों हो या। अपने देश के प्राणियों को शेष के लिए दिनके जी ने कस्य समस्या का समाधित कर दिया था। दिनका जो सच्चे क्षण में मातस्ता के सच्चे पुनार्पर थे। ध्यान वंशों में क्षण भी विश्वासनहीं करते थे। चालावरू में काव्य की गीत-गीत अनुसार जो मातस्ता का शेष कर देना हो सच्चे जन अनुसार है।

दिनका जो के उदय में अभिवादनकारण भावनावालो का उत्पत्ति का शेष के लिए हो उत्पत्ति है। वे नर भावार के विरोध में काफ़त करना बनाहै थे किसी लिहाव विश्व स्तर पर बन्धो शान्ति का अर्थ हो सके। यही किल्ले दिनका जो के वास्तव में मातस्ता में कुं दिखाई था। जब देखता यह है कि वास्तव तैयरदिनका के काव्य में कर्णित नारो में भो क्षमा उपाधिकारा का वेष्टा हो जाता है तब अंतिम दिनका जो का तर्क का है। किसी भी कठिनाई उसके बादाता की उच्च युक्ति होता है, जो मातस्ता काव्यकार ने किस रूप में होती है उसका प्रतिक्षण उसके काव्य में उल्लो लस्कर पूर्ण होता है। दिनका जो के काव्य

1-एकल परवित्त वस्त्र करे नले, ताम्य पर पाण्ड पूरा उन अधिकारी।

गोस्वामी वचनोत्तर।-राममनोरंगनाथ।
को नारा समाज-सेवा का यह मायवा स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। दिनकर-कृत उर्वशी नायिका के अनुसार पति धुकन्ता में यह समाज सेवा की भावना पुरुषोत्तम या प्रकट है। वह समस्त काव्य के अन्त में अपनी भाव-निष्ठा के यह स्पष्ट कर देता है कि इन विद्वानों नारों हो वह शक्ति है जो पटके हुए पुरुषों, उनके कौशल्य ते प्रभुभी प्रस्तुत जोध की परंपरा पर ला देता है।

भावे इस उर्वशी-नायिका के पुनरुत्थान कर मै उसी फिरने है। कष्टों का सामना कर नहीं ले। नारो उर्वशी नायिका के लिए कितना महान त्याग करता है, इस त्याग को प्रस्तुत धुकन्ता नायिका के शूर्दों में कहे ही आकर्षक रूप में प्रस्तुत की गयी है।

बार गया पोदुआ, देवि यह भो है यहन क्रिया का, अक्क हो तरा मुनि की निवास अधर्म, वे बिनुलोकों को शक्ति लगा नारो किर उठ चला है, और लुप्त हो जाय पुनः आतम, प्रकाश, हलबल है।

उर्वशी नायिका को भरत पुनिः शाप दे देते है कि यह बीजवन में उर्वशी नायिका को पाँच तथा पुनः हन दौरा है वे एक सच्चे रथ के दौरे कर कहलाते है, दौरे के नहीं। वह उर्वशी के गर्म के बायु प्रभुर एक एक अपना भाव होता है तो शाप-भय के कारण उर्वशी निवास तो जाता है। वह थोड़ा है कि यदि पुनः को पाँच मुनि के हुए पुनः तो पाँच नहीं रह निक्ली और यदि पति के आध रहूँ तो पुनः आधा कहा रह भरूँ है। जलः पति के साथ रहने के लिए पुनः को कहें।

उर्वशी - पंचम अंक, पृष्ठ १६६
वास्तव में अपने कार्य की तारीख में अनाज-सैकड़ा का माहना को बाहर करना। दिनांक जो की एक महीना क्वत्यांगूणित बिख़्यातता है। गोवर्धनो लुक्कावा। जो का भोजन हो उसके भावना की यहाँ चर्चित कर्कर्क मिलता है। भारतीय संस्कृति का यह प्रतीक प्रमाण रहा कि किन्हों हो विवेक परिस्थिति उत्पत्ति क्या न हो जाय। परते फिर भारतीय नायिकाओं ने मानक-वाणी भावना को सैकड़ा-भावना को कभी नहीं मुलायम। यहाँ भाव दिनांक जो के कार्य का मूल उद्देश्य रहा है। वैसे नायक-नायिका हृदय उल्लिखित उपाय में मानक-उत्पत्ति का संकलन उच्च उपयुक्त करता है, इसे कभा मुलायम नहीं आ सकता, परते फिर भी कई क्वचित के उदय है उत्पत्ति सैकड़ा को पालन का प्रश्न आता है, इसके यह नायक-नायिका का भावना होकर नूँजा जाता है, अतः जरूर दूसरे के

8- दिनांक, पृथ्वी उक्तित करता है, इस निराला पय मुद को,
कभी भेजना नहीं निराला तीना राज मन है।

9- दो, उद्योग, इसे मुख को दो, मैं इसकी पालन।

उद्योग- चूँच में, दृ १२८
उदर है उत्पन्न शिशु को पालने का बातचीत मानना नारो । उदर है उत्पन्न शिशु को पालने का बातचीत मानना नारो।

दिनकर जो ने नारो की उनाज कैसे उन्नतित्व और तृप्ति का उद्देश्य अना कृतिया मे लिखा है। मानवता से सम्बन्धित जिन महत्त्व महत्त्व को बिठलाने ने बताया है, वे सभी गुण गुणगति मै उस अंत में तक नहीं मिलते, जिले फिर नातियां में मिलते है। अतः नारो में मानवता से संबंधित महत्त्व के महत्त्व के सेवा गुणगति को उन्नत मृध्य मै स्थापित कर लिखा है, जिन शुक्लुतार नारो यह पुरो भावना उनाज के लिए प्रमुख करती रहते है। नारो यह लौंग नष्ट है, वह उनाज सेवा के बदल सेवारे परिपक्व के स्तर पर हो सुरुआत होता है। यज्ञालाप दिनकर जा की नारो का भो ने है।

दिनकर जो के काव्य में यह मानवा केवल शुक्लुतार नातिया मै हो व्याप्त नहीं है, जिन ठीक यहा मानवा रात्रा नातिया मै है जो बोला रहा है, जैसे धुक्कन्या मै। परिपक्व केवल के लाल-पाल मै रात्रा नातिया ने

---------

१- उर्फ़ - वृंद के, पु १५१
२- दूर देवि, जिन महत्त्व गुणगति की मान्यता कहते हैं,
उसके भो ज्ञानिक निकट रहने, पात्र नारो है,
जिन अवस्थ मुख्य-मृहात्म रह प्रशिक्षण प्रमुख दुःख है,
उतने प्रशिक्षण कहा नहीं रहते है प्राणा क्रिया के।
उर्फ़ - वृंद के, पु १५४
कितना कहना, त्याग की प्रदशितात्मकता, यह दिनकर जो का काव्य हो स्पष्ट करता है। यहाँ वह रैलितवादिक धार्मिक है, और कोई व्याख्या होती है काव्य में इस उदाहरण है, परन्तु अपने मौलिकता के दिनकर जो भारी का उस समाज-स्वेत माध्यम का जो नूतन प्रदान कर रहे हैं, वह अन्यत्र-व्यवस्था का प्रतीत होता है। तंत्र दिनकर जो के काव्य के पात्र गुणगृह गार्ड के इस संवेदन पुर्ण माध्यम को वराहण के हेतु कृत्ति शुष्क में करते हैं। गुणगृह ने जिन शुष्कर यू राश यो उनमें सेवा का वराहण को है, वे विश्राम यो भारतीय नारी के लिए अनुकरणमय है। त्याग और वैवा को सार्थक त्याग राजा के समृद्ध वह जानते गर्म गुणगृह को भी उत्तरा उच्च स्थान नहीं प्रदान करता। वास्तव में दिनकर जो के काव्य का सार्थक-विविधता नारी चन्द्र है।

दिनकर जो इस गार्ड के समाज-सेवा गुणगृह के स्तर पर राजसरोवर का भी कोई मुख्य नहीं आते। उनके बुधवार वैवा के भाव में जो पुनरात्मक श्राप है, वह भाँति भो राजय-मार्गित गो पह नहीं निर्मल है। किसी भी नर-

1- स्वस्त अंग्य दुःस्मुख लाग करके, रंजल के तरे हिया करके,
    दुःस्मुख ते कौण पुक ध्यान करके, ताड़ना लाग करके था हर।
रसिमरणो - पंचम वर्ष, पृष्ठ ३७

2- जपना कौया ऊतकृत न तुम राजसरोवरा,
    राजसरोवर का अधिकार न तुम राजसरोवरा,
    शाली स्वरूप उत्तरा तो तुम जा नहीं,
    पर, क्या बतात यह भी मन में लायो हो।
रसिमरणो - पंचम वर्ष, पृष्ठ ३४
नारे की मानवता के गुणाँ हैं सुवासित हौना बालित, राजा-रानी के
रेखदूर्वाणी विभाव समाज के धारो मोह महल्ल नहों रहते है। राशिशयों
काय्य के नायक काय्य काय्य गनी को नां रानो कुल्ल पर उक्त पवित्र नाभ
वे हो प्रशार करता है।

उसको है, है। है, वह केल नारे है।

उसको तो लन है, उसके वालकर कहका, उसके अनाथ को जुड़न लागा दिनका।

नारे नामका ना वाढ़ हेंदो रूप दिनकर जो के आय्य में स्तुति
है। नारे समाज के युगः प्रमूखके लिए प्रत्येक गाँव लागर रहती है।
नारे के केल कार्य की धर्ाना इतिहास के विद्या का है। नारे के वातः
हरे पुनर्वां मान काय्य को मो वजन देता है। दिनकर जो का यहो मान्यता है।
दिनकर जो काय्य के लिए विविध को उत्तर महल्ल नहे देते
है, जितन कि नारे के लम्बको मांग की। वह लक्ष दिनकर जो के क्रुद्दा
है हो ट्रष्ट है।

नारे के विद्या-वेतन गुणा को, धर्ाना उभर्षो पुना जारु ने मुझे
वे हो पार्चा मंग गम्बर मुझे मल्ल क न का है। वह जना पालन-पालन करने
वाता अन्य भेदिका युग्म्या की कहाना का भागा तू प्रिया मानता है।
दिनकर जो के काय्य का उससे वृद्धिशीलता यह है कि वे अने पार्चा के

9- र्षीनरसी - वचन उप, 80 अध
10- नारा-विदा नारा नारा-चिता, नारा वह वेल हामा शान्ति कहाना है।

उव्रो - पंजमकः, 80 १६४
महानमुण गुणाको माध्यमके उपर मुख्य लोक कर रह देते है, जिनको कोई आवश्यक उनके ऊपर न रह जाना। आयु शनाज-शैविका को खेल को चारो-ज्ञात करना लोक को आदर भावना मानता है -

यह गति कह लो, वहिष्ठ्य वह चाहे जिसमा हूँ,
मे आया हाम अप्रूत बन, उसा स्वर्ण जोवन का,
पिया दूध को नहर, कसनि, मे कहुणामया पिया के,
चारोज्ञात करना लोक मे वलकर का बुढ़ा हुआ हूँ।

शैविका सुनाया का स्लेट अपने देवित शिखु के लिए नक्सलपंक्ति मां से किंहो प्रकार ना कम नहीं है। दूसरा के गले से उत्पन्न शिखु को दिनकर जो के काव्य को नरी उसा मारृत लापूर-म्यार वे पालता है, अर्के कि कोई वास्तविक मा हो हो।

उपाज देवा के भावना का यह महान गुणा दिनकर जो के काव्य का नरी को आमूलणा है। वह इसे आभूषण के उल्लभ को कमा दोहराए होने देना नहीं चाहता है। तभी तो नरी को उपाज देवा भावना का प्रत्यक्ष सुनाया अपने पौष्पित शिखु को बॉर्ड का तारा समरित है -

यह बातम का ज्योति, हि नद्या हस बल फणि चुक्को का,
वखो, तम्मारा ताल नरी जारी का तारा है।

दिनकर जो एक उपाज शैविका नरी का राजन भाला-पिता वे मा बढ़कर करते है। उसके काव्य का राजा नायिका तथा सुनाया नायिका उपाज-शैविकाओं के को वर्ण का प्रतिनिधित्व करता है। नायक करणे कर्ने।

------------------------------------------------------------------

1- उद्धृत - पंचनं ॥ पू १६५
2- उद्धृत - चुल्लिं ॥ पू २५६
अपने गधे का मां कुल्लो ने करकर लेखिका मां राधाबाई मानता है। कुल्लो
तो उसे केल गधे मैं हा धारण करता है, बंध गधे ध्वारण करवे वाला ना। अन्तः
कवि पुत्र के जन्म को लस्य स्खलन करिता है, परन्तु ललन-पालन
करने वाला लेखिका मां जहेन्द्र केवा भावा के सन्तोष बहस-बहस-बहस है। झूठ का पौष्प
करता है जल्द जहेन्द्र केवा भावा का हो नहीं दिनकर जो द्वारण माना
है -

"कुल्लो ने केल जन्म दिया,
राधा ने मां का क्या बिखरा "

झूठ का समाज - लेखिका मां का समाप्त बढ़े हो शोभा गरे मिलता
है। गधे खेलता-कैरे वाला मां के स्त्री के साथ-साथ युगाधिकारी मां नारी का
लल-पालन और ताल जीवन आवश्यक है। दिनकर जो नारी मां के हस शेषा-
पाल का मुक्त कृष्ण है सराहना का है। कुल्लो पत्र मनो भक्ति का शेषा-भाव
पत्र तक्ष्या उत्तेकाओं है -

"सौ, दु पुत्र को है जिसकी, धोनंतो झिला ने,
और जबों कौड़, जाया है लम्पिनियाँ ज्योति को,
लेख, सिंह का प्रिया वस्त्र है, केव्ह देहिया दिलिसीया मैं,
पुत्र, अकारण नहीं मारण वे नुमे वहाँमें था।"

--------------------------------------------------

1- रासिरात्सा - तुलिय भगव, पृ ० ३५
2- उद्वीग - पंचाक अंक, पृ ० ४३
कथा का उच्चारण - एक राष्ट्रानुरागिनी

देश-प्रेमके रूप में:

राष्ट्र कवि दिनकर जो के काव्य में नारी-भावना के अनेक रूप
का उत्कृष्ट प्रकट किया गया है । उनके से वही पहले बुद्धिमत्ता नारी-भावना राष्ट्र
से संबंधित है । नारी अनेक भावनाओं से पूर्ण बजायकथा है । परन्तु इन सभी
भावनाओं से अनिव उज्ज्वल भावना देश-प्रेम है संबंधित है । कवि का समस्त
जीवन अपने राष्ट्र के प्रांत हिस्से हार हो गया है । वह अपने काव्य के नारी का
राष्ट्र-प्रेम की भावना का चित्रण किये निम्ना ऐसे धार्मिक का नाद दुःख रहा
है । इसके द्वारा ऐसे अनेक नारियों का यह भावावात भारतीय भावना के उद्देश्य
में अपने प्राण दिलाए-दिलाए निश्चित कर दिया है । दिनकर जो के काव्य में
चरित्र नारी की भावना भो राष्ट्र-प्रेम भरोसा भावित है । देश को
हेतु के लिये दिनकर जो के काव्य की नारियों द्वारा सह-सहायता की
त्यागत वोरमल का रूप धारण कर रहा है । अपने देश को नारियों के लिये
दिनकर जो का यह जास्तत है -

बाह- शृंगार ?
क्षौं दौँड़ो तव श्राव-प्रियारः
रास को मुरलो रशो पुकार ।
अरा भैली मारिनिति, हत रातार,
लक्ष्य-वाहार का ततो विधान,
अनाजन्तत किल्ला कर देहं,
पूर्णं करना होगा विल्हान।

एक जो दिनकर जो का काव्य नारी शृंगार के चरण उपलब्धि
है तो दूसरो जोर देश के लिये विल्हान की भावना के लिये भी नारी को तैयार
रहना है । इस दिनकर का काव्य का मूल वन्देश है।

- राजनी - रास को नुमलो नायक कविता (२००००) पृष्ठ ७२
जब-यह हमारा देश भारत विदेशियों के आक्रण ते प्रतिविरुद्ध हुआ, तबस्ते भारतीय नारा ते अपने पुराण के केंद्र पर कंधा मिलाकर देश के रक्षा के लिए प्राइवेट बलिदान किया। देश की विदेशी दावता ते खाने के लिए दिनकर जी के काव्य को नारा स्वीकार कर रखे। उसको वारता कैसे देश रक्षा के लिए तैयार होने पर नहीं, अपितु उसके बड़े-बड़े योद्धा पुरुषार्थ को पराजित कर विजय भो प्राप्त किया है। दिनकर जी रे देश प्रेम के लिए नारियों के पर मिटे ने महाना को अपने काव्य में बहुत ऊँचा स्थान दिया है। महाराणी लक्ष्मी बाई का उत्तराधिकार नहीं जा रहा है।

हाँ, नारियों को वारतमणों परम्परा को दिनकर जी ने अपने काव्य के जोकित हो नहीं रहा। विपुल उसे वारता का ताकार प्रतिनिधि के रूप में प्रति-विश्व भो किया है। दिनकर चार रब महान कवि थे। उनको वारता भरो भवितार्ण ब्राह्मण भो जन-मानना। देश-प्रेम का रक्षा के लिए हैं हैं - हैं हैं बलिदान हो जाने के लिए बाह्यवाहिनें कर रखे है। दिनकर जी के काव्य का नारा अद्भुत नैस्वर्य का प्रतिपादन है। वह कविक को आशाधार वाणिज्य का एक अत्याश्रय नाम नव विश्वासी, अन्तरंग पहाड़, नर पराजित, नारि अबली है विजय का दोप।

देश-प्रेम पर बलिदान हो जाने के लिए और खुद को नष्ट-पूर्ण कर भाले के लिए दिनकर जी के काव्य का नातिनी रोग के सिंदूर को रण-प्रौढ़ को शूल में ले जाने के लिए तैयार रहते हैं -

चाँदों का प्रकाश के आकार का दूर, शूल मल कर चोरे रहा है मांग का सिंदूर।

1-‘आयतेव’ - कविता-विज्ञ (२० लोलो) पृ २३५।
2- वहीं, पृ १२२।
राष्ट्र कवि ने अपने काव्य में चित्रित नारो-भावना के दैश-प्रेम से संबंधित तब को उज्ज्वल कराते हैं पूर्ण प्रवाह किया है। पुनः प्रायः या नारो सभी के लिए परतन्त्रता है यह कुशल जोवन में कोई अन्य दुःख नहीं है।

किस धरती पाता ने एह समारे पुरुषों और भो देशवासियों को जोवनादान किया है, भला उसका परतन्त्रता के स्वाक्षर को जाय ( नर-नारो सभी के लिए अपने देश भारतों रत्न करना एक पुत्र गर्व है। दिनकार काव्य का यह बहाना गुंबार भारत की प्रत्येक नारो में गुंबारित हो रहा है। दिनकार जो ने नारो-भावना का आश्वासन किया है कि दौड़ो है अपने देश को बचाने के लिए नारियों की धड़तल धारण करने सम्पत वाज-सज्जा को लय कर युद्ध के लिए कठिन हो जाता है।

आज दौड़ो जोवन का परन,
नगन उत्तमवार का त्वरित,
बाज नैवत भाव का नगन,
बाज निष्कर गर्व ढूंढ़ार।
0 0 0 0 0

अधूरे का उचित रंग उड़ने,
इनका मूर्ति भें अनुमस राग,
भ्रंगर नल-शिख तक भुजापरित,
बाज कहलौ निज अफल बुझाग।

दिनकार जो का काव्य नारियों की यह दैशें देता है कि उनका
विवर्त गुजार अपने देश को पण्डित में हो निराक संचार करता है। यदि अपने देश का हो रहता न हो तो उस देश में रहने वालों नारो सुभाषितों कैसे तरह दिनकार जो का नारो-भावना का अफल विकास है।

-----------------------------------------------
1- राष्ट्रवती - श्रव रास का गुरुलो नानक विल (रोलो) ८० ७९
भारत माता की जाना या अतिकृप्त करने जब कभी विदेशियों
ने इसके सम्मान का देख पड़ा, उस अयो देश की नारियों के देश के रक्षा
के लिए नहीं गौर गौर प्रश्नमतिक थिया। भारत-माताएं ऐसे विकट अयो में वार-चाल में देश-भक्ति का बन कर युद्ध के फैलने न कुछ पड़े और अन्तर की तस्वीर को
घार नी घाट उतार दिया। दिनकर जो को कविता देश-भक्ति पर
पर-मिट जाने वाले मातापिता बुधवार हेद लिखता युद्ध पढ़ता है।
यहाँ नारो के सफार असे फूलजोली युग की नारियों को देश-भक्ति दुर्गारिक किया
करके धूलघोम में आहार भरते के लिए काफी रहते है। यहाँ नारो को यूनव
में अव्यय देश-भक्ति के लिए परमाणु करते को लेवार रहते है।

भारत मैं जब कभी कृतका वगज़ा,
याता भारतियाँ वस्ता हो उदार निर्माण, कठोर,
दाराँ के अधा वहा,
आताँ का अनु राखी,
विल-बेला को जारता, पुष्प, रौलों मैंज़,
पुरुषार्थ को रण में भेज,
चंद्रिकार अगर,
हिंदू नैप धर-धर उम्मिको दिखा सजस्तो है।

दिनकर जो के काव्य में चित्रित नारियों का भूमिका युग्म है
उसके कृत्वालो काव्य का नारो को आहार भरते वालो दुर्गारिक भवनावों के लिए
प्रसंग बनाता है।

भूमिका-काल - राति-काल के काव्य को नारो में दिनकर को
नारो, आसा बौज्हतु रुप देखने के लिए दुर्लभ था। दाराँ में वाला हमारे
देश का नारोबैं किस रुप के बालव्यक्ता है, उस रुप को हैं दिनकर जो हो
अन्य काव्य का नारो को प्रदान कर चुके है। कहाँ गोस्वामा तुलसीदास ने उसे

1- परमुदास का प्रताप - गौर नामा कविता, पृ ४७
जानकारों का कौटि मे बलात्कृष्ट कर बिखा था। दिनकर जो ने उसके वास्तविक लेख को पश्चात कर उसका व्यक्तिविवाह किया है। दिनकर जा के काव्य को नाराज घन्य है, जिन्होंने भाक्य भारत माता को रोखा के लिए रणरचनाओं का लेख धारण कर अनेक गीत का रचना की है।

दिनकर पूर्व काव्य की नारो के लिए इसके अधिक और क्या पतन की बात होगी, जिसे नेश को राजा को बुद्धि का बात चीज तक नहीं और जो अपना ध्येय भारत माता को प्रवान करने के लिए अपने नाराज गौरवस्थित इमर्जेंसी का हो बात चीज हो सकती रहेगी। भारत में दिनकर आ खाने रोतिकाल का कवि दास्तान का कवि था, उसने इसका अंतिम ही कहा था कि भारत माता नींदें किरण दिलाने को बात स्थय बोलता। वे कवि तो घूर्णित ध्रुवित परि-तङ्ग्रेरित के पूजारों को मक्खी थे, जोने को दुख प्रदान कर रहे राजाओं के प्रति अनुमान स्वतंत्रतापूर्ण भावनाओं को भी विचार कर लिया। पुरा-वास्तविक और पुराणी संग्रह समस्त काव्य दिनकर जी के उल्लम्बोत्त नामों भावना के वजन का सिस्टर पुढ़ जाता है?

दिनकर काव्य में नारो को देश-माता के सम्बन्धित भावना का चरम विख्यात है। इत्यादि काव्य की नारो परलोक रहना तो गाता है नहीं।

1- गृह गिला गिला मै गोलोया है, कहे दुमाकार लहर गजक है।
    गिलोया उगा जल है, बुराहे, बुराहे और व्याला है।
    विशिष्ट का मान न अंतिम क्षयाला जिन्हे,
    जिसे व्याप तब अध्यान ढौंढ उदित फसाला है।
    तान तुफ वाला है, विनाद के राला है,
    लुलाला है, दुलाला है, विश्लेष प्रश्नाला है।  

2- हारे नर को देश, दबिवरि वीर गोरिन के मार है।
    बल उठतो है, जाग जान पक्का न भंग तलाप है।
    परमुराल को प्रहारित - गृहर नामक कविता, पृष्ठ ७७
परत्तुता से तो अच्छा मृगु है। वह जैसे प्रत्यक्ष ते पति-पत्नी संबंध
तब तक मानने के लिए तेयार नहीं, जब तक न कि देश भारत स्वतंत्र न हो गया।
इस काव्य की नारों को पुनः पुनः को पुनः मानने के लिए तेयार नहीं, याद उँका
देश परत्ता है। किन्तु उच्च नाव विनिर्कार काव्य में निर्देश है। पति-पत्नी,
माता-पुत्र के वस्त्राक्ष देश प्रेम के सामने कोई पहलवान नहीं रहते हैं। बास्तव में
विनिर्कार जो ते के काव्य यह नारा भावना पूजा को प्रतीक है। -

"विश्वास आर स्वेदिल,
प्रिया-प्रियतम का फिर नाता है।
विश्वास आर स्वेदिल,
पुरुष मिर पुत्र, प्रिया माता है।"

विनिर्कार जो के काव्य का नारा भारत नारियल जोते जो स्थान
उनका कर्म है। उनकी तरह है कि वे दुहे बात की पुण्य स्वरूप हो पराजित कर दैशी
और यदि वे दैश न कर पाएं तो गलापूर्ण है। ते दबाव के कारण उनका वस्त्राक्ष रहै
का जानियो।

विनिर्कार जा का काव्य उसे बात का पुष्ट प्रमाण है कि यदि
पुरुष उनकी बात के को देश पुरुषाने का प्रयत्न करेंगे, तो निश्चित रूप से
उसके पुरुष में विश्वास वास्तविक कर लगा प्रविष्ट न होगा। नारा के उत्तर में विश्वास
उसके बात के लक्षात्मक प्रयत्न का प्रतीक है। विश्वास भारत का कारण
व्रापदा भूल भूल को उत्तर के उसे नगर करेंगे हो था। कोई ने भूल हा
विविध्य है कि व्रापदा के वस्त्र-विविध्य ते नव देने थे उन्हा विनिर्देश हुआ
हो, परन्तु वास्तविकता इसलिए भिन्नरूप हो था। विनिर्कार जा ने क्षेत्र के
बात का बड़ा है मानना रूप जोस्वो उद्देश्य विनिर्देश है। व्रापदा के बाद
का उपनिर्देश यह वास्तविकता की आश्वास करता है।

- "कुरुपदा" - चूली संग्रह, 30 49
भरो सबा ता लाज दौलिया,
को न गई तो टूटा,
उस तो महो कराल आग,
उनका निकाल दोकर फूटा,
ज्वैः-ज्वाः बाँग विवश दौलिया,
को ठिठी जाता था,
त्वप-त्वब वह आड़पना,
दुर्गित यह नगर गुह माता था।  

प्राकृतिक तारा का आह हस विश्व को भस्व कर देंगे को चित्त रखता है। दौलिया का ज्वैः-ज्वाः विवश दौलिया ते कीसकर जिल्ला का ज्वैः-ज्वाः विवश दौलिया हुआ है। दिनकर जो आपने काव्य भाषा नारा ते सम्बन्ध का रहना करते हैं यहाँ उसे इस से विद्यमान पुर्ण युक्ति का रूप प्रदान किया है, जो कि विद्यमान पुर्ण ही ज्ञातनुष्ठान मुझे मांग के अनुमूल है। विश्व स्तर पर नारा-ज्वैः फसला जा जुका है। नारियल को मांग को तरह लेकर भारत से बाहर भरकर भाख्रे अधिकार नारियल की प्रदान कर रहा है।

पृष्ठांक दिनकर जो आप नारियल की वस्त्र विवश मांग एवं अधिकार के प्रदान का संभाल अपने काव्य में पहले ही कर दिया था।

प्रकृति ने तारा का आह आज भुकुमार भाषा के प्रतिक के रूप में हस लौक में पेजा है। इस भुकुमार भाषा का आह हस तारा भी की विवश ने रूप वरदान बोर दें कर दिया है कि यदि नामों अहवाल द्वारा भुकुमार समकाल पुनर्जाति उनके अन्तर्विकास का ज्यत्व करने तो तुर्यत है। तारा को चह भुकुमार भाषाविकास वार्तालाप का परिवर्तित हो जाएगा। तारा जित नया आग यह भ्रान्तीकरम के घाड़रण पर तैयार उस दिन पित्तित रूप में प्रलय हो जाएगा। पृष्ठांक ने प्रमो काव्य में नारा को इस भ्रान्तीकरम आग का तैयार पूरा है।

१-भुकुमार - चुम्ब गणपति ७२
मानव नारों के सफर इस प्राकृत कमाल व्यवहार के अन्तर्गत मुस्त काली का उत्तरा असाधारण होता है। दिनकार-काव्य में वानिर्वित ड्रॉपदों के असान का उत्तरा ही प्रभाव पड़ता। उसके चार वर्ष लूह लुह फैलते हैं जिसने कठोर लस की निकटी लगा था।

कुलशाला एवं निर्देशन नारों के असान का प्रारंभ इस विश्व का पुल्ल को बुद्धित है। दिनकार जो को ड्रॉपदों निर्देशन नहीं अपने वक्ता में अन्तर्गत को करार धीर घर्णा किया हुआ है। ड्रॉपदों के नमक नारों वर्ग का प्रमुख प्रतिनिधित्व करते है। दिनकार जो के काल अन्तर्गत नारों नारों वात के अन्तर्गत प्रतिनिधित्व का नहीं करते अपने समस्त नारों वर्ग के प्रतिनिधित्व के अध्यक्ष होते हैं। नारों के वन्म रंग प्रमुख वात के प्रमुख वात को प्रवाहित हो रहे हैं और वही वात वात को प्रवाहित रह जाता है। दिनकार जो को ड्रॉपदों-वात के अन्तर्गत है नारों के इस वात के वर्ग म्यूनियर पात्र का कुरसों के काव्य में ठहरे हो प्रभावशील रूप में चित्रित करते हैं।

"उसके काव्य देखा-गान था
कैंठ लुह थे हरा,
पुंजो मूब मुक पुक सरकार था,
देखा लुह थे हरा।"

- नार की कार्ति-भावा इस दिन,
केर गया देश म गड़ दे,
नारे ने सुर को तैयार,
फिस दिन निराल हो नर थे,
पहा तमर आरम्भ देश मं,
होना था उस दिन थे,
उसका लूह यह पंक हसिद था,
घोना था उस दिन ही।
दुरूस्त्या में घर लड़ा था ।
उसे तपाई उठका,
एक दापूत बालीक बन गया ।
यहा चौरासील उठका ।

दिनकर जो के काव्य में निरंतर रूप से नारों भावना के औजस्वो रूप का सुंदरित विवरण किया गया है ।

काव्यानि नाटिका शुरुआत का ओजस्वो भावना ।

| शुरुआत काल से लेकर आज तक नारों-बाति ने पुरुष के द्वारा अनेक प्रकार के उद्देश्य जस्ता की वहन किया है प्रत्येक देश तथा भाव का एक उम्मीद होता है। पात्र ने नारो के प्रति किये गये अपमान की गोपा को बीर कोई ब्याख्त तदार दिया । उसने नारो को बहुत अधार दास की पूर्ति वसमन बन। पुष्प की लाज्जा नारो के प्रति आदर का कोई चोट भी नहीं रहा। नारो भी जरूरत की बालीक मिल गये और उसने अपने प्रकट कुमारिकार के रूप को प्रदर्शित कर हो दिया। दिनकर जो उसके प्रति ताना गये तुल्य का विषय अपने काव्य में प्रस्तुत किया है ।
| रुप बाप जिंदगीमार अने जी जुल्म वह, ।
| उत्तर नारो में कहाँ नैन हो उफ्फतो है। ।
| इन्होंने वाँचू मन के बघे जला गये, ।
| कुंभ और उनका जिंदगी चाहे रुप रहते हैं। ।

श्रीमद्भागिनी - चुलिया - अग्र, पृष्ठ ४२
पर ऐसे नहीं रहने का मैं जवाब निकला,
तारा आवत कर गया आग बुझाते रहा।
बांधि, वह मय आ गया, जिन गो ने जिनके,
था लगा रहा नामकों को खोज खोज रहा मैं।

दिनकर जो की तारा के वोज विभागत को माँगित नारंगो खेल
वैर के बदल मझू सबूत न हो नहीं है। वे काल व्यवहार बारिक देखकर फूसकर भी मरते हैं।
अपने काह्व ने चित्तित नारों का उम्मिन स्थान नहीं बनाया कर,
विभागत को माँगित मकरकर देखने का प्रयास नहीं किया है। यदि उन्हें नारों
भावना को देखना ही था तो उनके बन्त्स में विषमान बोरता खेल विभागत
रूप को उन्हेंने देखा। उनकी नारों दुरदास के गोपिया, जो को बोड़े के घटी।

1-नील चुमे को मूल्य नामक कविता (रालौ) पृ २४३
2-निरन्दर उरस जला कर बैर, ईसा के जन पवित्र देहर।
पहले चंदरि जन पुनि खर्चा, दिन-दिन जन आशुर, जो
विभागत पेमस – वयं धर्म, पृ १०२
3-कामिन करे उताने। हैरतिह -खुदय इनके चंचबाने।
4-लिलौल जन लागू। मुनिदुल मानस मनस्थ जानू।
विभागत वेमस – वयं सनातना, पृ १३५
5-ओ नहीं पाये सिखिके विर पर धर्ते है,
भारी मो खुदय उसे उसे नहीं वर्तते है।
पातौर रक्षों का खुदय विक्ष अनन्तकर,
था की वहां का करब लोर गति विल।

परुराम को उताना – खंड पांच, पृ २०
मैं विरहारित के बात लेने से हो नहीं मानें होते। उनका नारा केवल कामुक व्यक्ति का हो कमू अभिप्रेरणा करने के लिए शोक नहीं है, जब तक कि उनक मृतक के ब्रह्मार्य न दिखें जंगल न हो। दिनकर काव्य में विमिशिलार की वर पति माता का इलाका शाफल चित्रण निष्काषण रूप है। वर्तमान पुलिस है। यदि शाफल विकास देखा होता, दिनकर जी की नारो को चारतापूर्ण माता का देखा जाय।

भावना वे और भूमि ने नारो के ऊपर आल्मान ने भरे जी वार किया, उन का भुक्तान न को मला प्राण को बाहर खुलता दिनकर जी के काव्य का नारा के तक दहला रहता। नीमा का अविश्वसनीय होने पर उनके अपने रणार्यक ध्वनि का वातान का हो लिया। दिनकर जी ने नारो के प्रति किये गये अपने से का नहीं हो बीजवले चित्रण रहता है।

क्षण के नांग लो लले, क्षण को गिरने लगा लस,
नार नहीं, नार्यार्या ने छोड़े लले का हुल घरीनार।
कामधुर्य नाराय के नांग जातहा कांप उठो घर-घर,
पर साथ काँप हा झुंझा नहीं, पर जाय जाह हो तरह।

लस्टर ने लुका डंडा, कहां हो, जपने जपने यह अनंत,
कब तक तक पार्शे रक्षो रक्षो के दो थुटे कर लल।

----------------------------------------
1-निति दिन करवत नैन हरारे,
बका रक्त पावत भूत प्राण ने क्यूं बैर स्वाम विनारे।
2-तिर पर तिक बीस भास, रक्त चन्द्रा है,
भगारे उसस का करता अभिनन्दन है।
3-बाहर रक्त मे नमा पाप मूलते है,
कुंदी नृत्यला के पथ मा मूलते है।
4-परापार को प्रत्यक्षा - लुक पांच, पूजा रक्तार
5-बापू हे (रामलीला) पूजा रक्तार
दिनकर जो के काव्य की नारों को तुरस्क आए मैं हम विलक्षण को
क्षुद्र है का शक्तित है। नारों की क्रमण चोलकार मैं श्रीनिवास की नहीं कहती है।
निश्चित रूप से महाकवि ने नारों के ह म श्रीनिवास पूर्ण के वर्णन करी के पूरा-पूरा तकलीफ़ प्राप्त की है। दिनकर जो के काव्य नारा
के तुलकी रूप का सफल प्रयास है, जिसे भावों कवित-पथरी निश्चित रूप से
उन्होंने सम्मान कर प्रेमित कर लिया रखा है। दिनकर जो का मुख्ततलार का वाह
गाथा का शक्तित का उपजनो भाव तरारे वो है।

दिनकर जो के काव्य की नारों एक और मुख्ततलार भावों को प्रतीक
है, तो दूसरों और वह वर्णणका का साहाय्य रूप में है। दिनकर जो बोर
रूप के एक से विवरण की। जैसे ब्रह्मा उनके काव्य में वर्णका द्वारा नर-वीदार्ज्जों
को प्रमाण-हृदय के गुजरते हैं, उनके भर्ति उनके बोर काव्य में चित्रित नारियों मो
रण-चंद्रों का श्रीनिवास खूने रूप धारण कर लेते हैं।

दिनकर जो के काव्य पर व्यक्ति उशितपात करते पर पता चलता है
कि जानके बारत नारा-काव्य मै नारो-भावना की दौरा हो रूप का विशेषत्वा
चरमोलकणी दिलाया गया है-

१- नारो की ऊँचायवय भावना
२- नारो की बोरतनवय भावना

नारो का दौरा हो भावनावय का उच्चारण प्रस्तुत कराने के लिए
दिनकर जो के अर्थकाव्य के सफल लाभ किया है। नारा को ऊँचाई
के सफल समझ-मिल भावना पर उशितपात के समझ-मिल व्यक्ति में किया जा नुका है ब्रहम
गोपंग का विषय नारा के बोर-गह रूप में समझ-मिल भावो का अर्थ करता रहा है।

---------------------------

१- यह ग्राम-दाक्त, केमण वैक्य का चोलकार,

जह विलय हुई पिता का मन, आई धूपकार,

जह विलय मूंग वस्त्रणा की जाह,

आ रंजी करी हुई दिव्यार.

धावधाव तथा-कलित-विच्छेद (२० तीन) पु.५२२
प्रकृति ने अपनी तूफान के, नारो के कायिक स्थूल रूप को चित्रित करते समय इस बात का पुरा पुरा भाव रुका कि उसके ऊपरो रूप को दृश्यात्मक ताज-सज्जा है इतनी अविश्वसनीय कर दिया जाय कि वह पूर्ण वे आरंभ का अंकल नहीं बिना बन जाय ज्ञानके वन तत्व की भी चित्रित करने तककर कर दिया कि यदि तारो को आवश्यक पड़े तो वह दृश्य अपने दस्तावेज़े पहुँच रूप की मदद उपलब्ध है। इससे रूप ही उसका यह प्रति-प्रतिरूप रूप है जिसका सफलता बिना दिखाई जो कायम में विक्षा है। जल्दः जल्दः सदृशीय ताज-सज्जा को दिखाई दिना है, वर्षा का नासाह काल-रूपा रणजीतको भी है। उसका यह रणजीतका रूप उसके ऊपर लुढ़कता है और इसका प्रयोग नहीं होता है, जब कभी उसके न्याय अत्यन्तों को गोरों का विलुप्ति कर देता है।

रणजीत या अनुदाना को नम कलाई हो सक्षा आते पर एक हेतु काल-रूपा सज्जाएं का काम करते हैं। दिखाई जो ने आसे नारो स्वभावित कायम में नहीं आई आश्वानिक चित्रण किया है।

जिसकी वांछा वस्तु, लम्बा अरुण है,
भाषा संको तहत रोग, जो वाले प्रसन्न है।
जब वहूँ प्रेम जिसका तरंग उच्च घूर्ण है,
वायुधरों चारों चित्रित वाही गरता है।
उसके प्राति बलिमत - बोज बोलता है,
तलार ग्रेम है और तेज होता है।

उपलब्ध यहाँ ताता के हो उपमान की लक्ष्य का परिणाम था। यदि श्रीरोपी को के अन्त अपमान न किया जवा होता तो हता दारणिक रक्त-पन ही होता। दिखाई जी की आश्वानिक के भावना या यहो सफल विकस है, जिसे नारो को केवल दृश्य रूप में हो

1- परजीत का प्रति-प्राप्त से, लड़क पाँच, ३० २०
बना रहना ठीक नहीं है। यदि बावस्थकाल पड़े तो उसे एक दौरे में हो नहीं
अनेक दौरे पदयात्रा का हम धारण कर लेना चाहिए। दिनकर जी की नारोका
पूरा रुप-वौन-दृश्य में नहीं जानुकि भावक ब्राह्मण मैं सिखाि करता है। इस कायम
को नारो इस विख्यात का अर्थ निहूँदिन जिहूँ है कि यदि नारो पुष्कर मैं शान्ति
और सम्भान को करते हैं तो हित किसी ने एक कंकाल भी नारा दर तो उसी
भ्रान्ति कारणों लेकर भी तूफान का जायेगा और वह हरभराना विश्व उसो में
भाग जायेगा। अत: नारो के वम्भान को रस्ता करना इसके बाहर का कौशिक है।
नारो हो विवादास की वह अनुभव वृद्धि है, जी इस वस्तुका सुरक्षाला जिहूँ हुए
है। यदि मुख्य इस तुलूँ की मूली माति नहीं धमकाने तो नारो हो वह
समस्त विश्व का विचित्रत उस वास्तव कर देगे। अत: नारों वम्भान स्वीति है।

दिनकर कायम का रणजितमो का भ्रान्तिकारों रुप उल्लेखनीय है -

"अष्टि विपथ गारमिक जो न जात किस रोज चित्र जिथे है जाकरः,
मिटरा जै किं दिन नाग कुंड बबर मै बाग लाकरः।
राहु बनो वर बन देश मै जब मूलथम मताकरः,
दिक्का दूरेगा भूंग, न जाने किंकरा पहल गिराकरः।
अन्वेष्य, दूर, निमोह सदा पैरा करार नतीज-गायः,
का-कन-कन-कृत-कन-कन-कन-कन।"

दिनकर जी के नारो निररता की वह सफल विष्णुवाशा हो मानो
जाविन्यक कि उनकी विरोधी दूरागा और करता के तत्का का नारो मैं एक
साथ निःसिव खिया। नारो के वौन-दृश्य का सफल तब भागर रुप उसके मूलगारक
वौन-दृश्य में हो विहार नहीं करता। नहाल सख्त भी यह चाल थी कि नारो
के मांक के लौटि मै उसका तुलिता के वाग केवल अधार और वृक्षारों को नहीं
बना रचना वहजिन है। उसके इस सम्मान को दिनकर जी ने अपने कायम मैं वास्तव
रुप प्रदान किया है। दिनकर जी का विचार वह नहीं है कि नारो को अपने
वौन-दृश्य और वृक्षारों रुप की हो देना हो चाहिए। इस विश्व मैं ब्यौरसक नर-नारो

1. शुक्ल - विष्णुवाशा नामक कविता (२०लाख) पूज ५२-५३
कर समय के अनुसार हो कठोर वन कर रखा चाहिए। यदि नर ची नारो, उनके अधिकार तथा सम्पत्ति पर कोई श्रद्धा प्रसार कर तो व्यवस्था उस समय भी गाँठी की तरह से हरे घोनर-नारो शालिन्य का प्रतीक अरे रहें। दिनकर जो यह नहीं कहते, उनका विचार है कि अधिकार को बोलने वाले श्रद्धा को नष्ट-मृदा कर देना चाहिए।

दिनकर जो अपने काल्पन है चित्रित नारो को तुलना एक पौधियो-शालिन्य गुप्त का। नारो के उपाय अबता मानने के लिए कभी लैंग्यार नहीं है। यदि क्षीणता श्रद्धा-पौधियों को साकार अभिन्य के रूप में धारण करने हो तो वारसावरूप रण्यांध्यिनं भी होता, तो रावण का साल्सा को क्या था कि उसको जो देल भी पाता। दिनकर जो का नारो भावनाकैल्पितकों को बस वारसावरूप भावना है सिलेशी, जिस दोस्ता की उनकी, दशक है तात्त्व युद्ध ने प्रभावित किया था। दशक भर वे कैल्पित का रण्यांध्य तो भ्रमाव था। उसके रूप-पौधियों के कलह प्रभावित नहीं थे, वे उसके रण्यांध्यों रूप को प्रतीक्षाकरते थे। दिनकर जो बाहर है कि भावरको प्रत्येक नारो उन्मुख दक्षिण का भावना है उठकर अपने में भ्रमाव का संचार करे और अवस्थिता पड़ते पर उनका यह क्रान्तिकारों रूप प्रबल हुकर है रूप है। रण्यांध्य ने प्रतीक्षा करे! तभी उसकी भावना का श्रद्धा भरमाणिक अब जायेगा। दिनकर जो क्रान्तिकारियों नारो कैल्पिक कामयाब हैं।

1- क्षोलता की तिस्त कोई, जौरतु, त्याग कर से काम तो यह गाँठ है।
2- पुण्य है विहार कर देना उसे, कर रहा दैरो तरकारी का लाभ है।
3- कुरंजैन - विहीन शरीर, पू १५
4- पाना हाथियो-लाठ, तड़काता है, वह नहीं काम को ला, गोर बाला है।
5- भास्य हाताल-घार, वह खाया है, कब उठकर हुकर युद्ध जाता है।
6- चंदका कान्त को प्रण-रात देता है, रथ के चकके में मुख झाल देता है।
7- परसुराम को प्रतीक्षा - कण्ड वांछ, पृष्ठ १६
नारा के अन्त में कौप स्तनपान भरा ना निकाल करता है और
उसके कायम को नदी में व्याप्त वह फूल खेत सुकार रुपी दो दिन
अग्नि को झट पिटावते लाता है।

नारा की बालाकृत ताल स्वप्न प्रतिमा को अक्षय निदर्शनाय है—

"जब कुप्त काल चारात त्याग जाता है,
चित्र वन फूलों का पराग जाता है।
कोट्थीव तोष वन सयो आग जाता है,
कठो हटकर कामाथी राग जाता है।

वन्द्र पर अनो विभा प्रभु दरा रहे,
गरिव बुशानु तब कृप्या शुद्ध करो रहे।"

दिनकर जा के काव्य का नारा बेड़ा तैयार उपर और ईरानी में पानो

नहीं है, वहाँ अधिकार भोजन कर देने वाला चित्रण रिमा प्रज्ञविलित को रहता है।
वह ठंडा नहीं है, उसके विश्व को जला कर राख कर देने को अच्छत है।
दिनकर जी का नारा मुन्यम का अने स्तन-पान से लाल-पालक काश्य करता
है, परन्तु उसका यह स्तन-पान एक दिन विषा-पान में भो परीक्षित को
जाता है। उसके पाथि का विंडफुर की रेल में काल मुन्यम शिरिणा बनने से।
भो गूरो-पुरोश अच्छत है।
तुलक के उस्मान उसे ठोर और पुरुआरी की कोटि में
रखने का आक्ष ख धक्ष काल मुन्यम में नहीं है।
वह उपयोग चाहता है और उपयोग के
इतने गुरुण को प्रेम सयीणा ना करता है, अल्प: पुरुणा उसे त्यौत को तृणों
जूदे, होगो में सब कुछ है, नहीं तो क्रान्त जाहर करै, अलख पर प्रलय नयो गो
होगो है।

‌

8- भाषक परशराय के पुलोका - लख्प पौर्ण, 70 ४६
2- भरे नमस्त के स्त्र-शूल, वनु-काल शियों के शत-कान।

मुक्त चिर कुमारिक के ललाट में, नित्य सोना रुढिर चन्दन।

जाँचा करतो हूं छिला शूम का, दूध तो ढंग तिचियर बुड़त।

तंहार लग अवर पलन, नामा करतो है शूम-कन।

हाँकार, ब्रह्मण, 72
माया-भावना का और का रूप दिनकर-काव्यक्रम निर्माण कारणहू ग्रहण को और हो कृत्रिम है। नर में शक्ति दो अर्थ है, कि उसके अन्दर का अन्तर अर्थ है वृद्धि में सक्षम हो जाय। वह विशारद की कृपा का काम भरा होता है, जिसका नर हर प्रकाश ने उपस्थिति का क्रिया उसके अन्तर में भव्यता पानी का रूप का निर्माण हो करता है। दिनकर जी के काव्य का नारोत्र के वक्ता पुरुष ने शक्ति शक्ति कृतिव चार गर्मियों प्रवास को नारोत्र अजीब अन्तर घायल कर लेता है। दिनकर जी के नारोत्र कविता प्रवास हो नारोत्र का प्रारंभ विकल वृद्धा हो नर हो। यह अन्तर वालू भी मोगी कंठ पर शत कुछ कविता दर्शन की सैरें नहीं है। दिनकर जी के नारोक के वक्ता प्रवास हो अजीब का वृद्धा पुरुष भयों हो जाता है।

1. कहरत न देवर को कृति कुल-शिल्प कहत दराचि।
   पंजर-गंगा पंजर दिलं ज्यां पुरुषि जाति。
   विशारद संख्याएँ, पृष्ठ 207

2. नारोत्र तुम के लिए आदि हो,
   विवस्थार रूप का प्रताप है,
   पांडुर्ग रूपों का वहाँ करें,
   वजन के वन्दर सपना है।
   0 0 0 0 0 0

3. अंदलू से मोगी कंठ पर,
   मनोरंजन कुछ रूप होगा,
   तुमको क्यों सिमट रैला है?
   यह विन्दु-पत्र रिक्रिया होगा।
   कामायनी - लघु, पृष्ठ 194

3. शिको धारिया के बीच, लाज पदों के हिस्से पड़ा था।
   शायद, शायद कि उस समय वहाँ कोई वैदिक लड़ी थी।
   इसी तै, तौरतां की दलेत होम्द घड़राता है।
   अत्मा का वांछे -(रोली) पृष्ठ 37
विभा-पृष्ठांशी नारो की वरिष्ठ त्यागमयो भावना:

दिनकर जो के काव्य ते नारो एक निश्चित विविध मित्र त्याग का साधारण प्रतिप्रमाण है। वह एक हामी है जिसमें प्रकृति मे अपने रूप को निर्धारित है। पुरुष उस मित्र विश्वास की दो विवेक कर बनता है।

इहाँ विश्वास है, सम्पन्न है, वहाँ नारो पवित्र मित्र द्वारा त्याग विभेद का श्रद्धा तैयार रखता है। इले-खट उन्हें श्रद्धा पुरवात तायो के इस त्याग-प्रय विभेद को ब्राह्मणिकारों रूप में परिवर्तित कर देते हैं। अतः पुरुष को बाह्य कि वह नारो को श्रद्धा एवं सम्पन्न है, तभी वह नारो-त्याग एवं विश्वास की सहायता आपने अवृद्ध-वैक यो निर्देश के तक है जाने में सक्षम हो बनता है। दिनकर काव्य इसका बाह्यता है कि नारो ते जम्म-सम्प पर पुरुष उनके अपने विश्वास के बनने-मुक्त किया है -

"त्यागमयो रूप कहे नहीं रुकता है अभिक जम्म तक, शतरंज तुम जाग अग्नि नारो पर उनके पुष्टि मे।"

मशाकथि दिनकर जो ने नारो के त्यागमय जोवन की पन्ने बलाकर उनका चरंभोक्तिरस्मि सम्पन्न किया है। नारो के त्याग वर्ज़ तथ्या का हत्ता उष्मतेन विच्छन्द जन्यत्र दुःख हो है -

"भें, तिथि का जन्म ग्रहण करने में तड़ा भूष्ण है, चन्द्रामुख कर विज्ञ प्राप्त कर केता वर्ज नारो पर।"

(प) गारो-भावना के विकास का अभ्यासित पता:

"अभ्यासितको शूद्र दो शूद्री के विकास से जन्म है -
बंध + अभ्यसित"

1- उपरोक्त - परम अक्ष, पृ. १५६।
2- वहीं, चुली अंक, पृ. १४५।
"अधि उपस्थि है और आलोचक प्रभूति है। आलोचक श्रौद का अर्थ है - जिखाना सम्बन्ध जात्मा है हो तथा अधि उपस्थि का कोई ऊपर उठने से होता है। जब उरुखाल्यालोचक श्रौद का अर्थ हुआ ? या जात्मा अथवा तौरपर अलापनक भरततल है ऊपर उठकर हो। लोकिक जात्मा वे ऊपर उठकर अलापनक पर गात्मा को दिशाति जातो है क्या अथवा आलोचक श्रौद का शदो अर्थ हुआ - ती गात्मा वे ऊपर उठकर पर्यावरण है सम्बन्ध रुकता है।

दैहि नारायणानाथा जी लौकिक घरालत है ऊपर उठकर आलोचक घरालत तक पूर्व जाय तो वे उसका आलोचकश्रौद कहा जायेगा। दिनकर जो के काव्य को नारायणानाथा का पूर्व वर्णाशी यही है, और यहूद उसके विकास को परिप्रेक्षित है। दिनकर जो के अथवा सम्पूर्ण शक्ति नारों हस्तो आलोचक विकास है सम्बन्धित काव्य में लगा दी है।

नारा-संख्या में वाष्पत्व का निरीक्षिता:

पहाकर दिनकर का 'उद्वेगों' प्रणय हस्तो आलोचकश्रौद को उसुल गहरास पर पुनः है। इस सम्पूर्ण काव्य में नारों के दो हो पहा चित्रित है।

1- सारोतिक
2- आलोचकात्मक

नारों के सारोतिक पहा का विख्यात तो जलो विख्यात के पूर्व लगाई है। जब इस उतर क्षण में नारों के आलोचकश्रौद पहा पर अङ्गित प्रकाश डालता और उसको गुणिताभासो युक्त करना इस स्थल पर आवश्यक है। पहाकर दिनकर दस्तो जोवन-पाठा के सनातन होने के कुछ पूर्वों के काव्य-उपाधि 

रिश्वतस्वारूप में दैरो काव्य-यात्रा के नाम आ भूमिकाम लिखा था। यह भूमिका गारों को भावना के विकास का चरम परिप्रेक्षित-आलोचकश्रौद को और युगिताम वंकित करता है। उनलेवे उद्वेगों प्रणय के पूर्वाशी का उद्देश्य क्या है?

1- घेर  हिंदी। कैसा, २० दिसंबर
हस प्रस्तुत को लेकर उसका समाधान भो प्रस्तुत किया है और इस समाधान में हा नारा-भावना का आध्यात्मिक पदा स्थित है।

उदाहरण का उद्देश्य क्या है? हस प्रस्तुत को लेकर एक समय काफी चली गई थी। उद्देश्य, उद्देश्य या जिसी उद्देश्य का कायम सभी निकाली जा जाता है, जिन्हें नहीं किसी भी धीरे की सामने रखकर इस कायम की रचना नहीं की है। अन्यथा कोई भी निषिद्ध करेगा तस्वीर नहीं होता, जो एक प्रकार से लेख के उपर भी प्रत्यक्षतावृत्ति है। उदाहरण ने कहा था कि मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि कौन वास्तव में नहीं हूँ, कितना प्रयास नहीं किया कि का भी नहीं हूँ। उदाहरण के कारण के सामने भी प्रस्तुत और उच्च अनेक है।।।

उद्देश्य के दिए जा ने 'उदाहरण' के प्रतिपादक को लेकर पहले तो अपना पूर्व-विभाजन किया है जब मैं पूर्व-विभाजन करा गया है कि उदाहरण का प्रतिपादक नारे-भावना का आध्यात्मिक पदा है जो व्यक्ति रहता है।

नत ही या नताड़ जब वह इस लक्ष्मीकार नारों में पूरा के गर्व तक पार, उत्तर-दश करता है तो उम्मीद पूर्ण सम्बन्ध इस लक्ष्मीकार नारे होता है। जब जन्म लेते हो लोगोंका भाव नहीं होता। अन्यथा पहले वह इस लक्ष्मीकार नारे को अवचक करता है, उपयोग करता है, पूर्णिमा जहाँ रहने के बाद हो जोवन को आधार मिला तो क्या तो बता हो। वह निःशास्त्र करता है जब मुझे हतना अच्छः समय इसी निःशास्त्र - पूरा कायम-वात्रा, पूरा चन्द्र डिशा
इन्द्रिय लोक विचार कर-करते व्यतान ही गया क्या मैं जोगन का बचन उद्देश्य इस इन्द्रिय लोक को प्रभावित हो हो ? इसी वात से महाकवि दिनकर जी स्वीकार कर प्राप्त हो जाते हैं और उसका उद्देश्य है इस इन्द्रिय लोक से उठाकर अलोकित लोक से स्थापित होनारा होता है। यह अलोक-िज्ञ लोक आध्यात्मिक पथ है। अब है कि दिनकर जी उद्धारक तर-नारो का उद्देश्य आध्यात्मिक पथ है या क्ये जोड़ देते है ? नारो-नारायण का यह आध्यात्मिक विज्ञान कैसे होता है ? दिनकर जी का ब्रम्हत नारो-प्रभाव काव्य नारो-नारायण का आध्यात्मिक शृंखला सम्बन्ध स्थापित करने की हो सी ली गई है।

नारो-नारायण भा एक योग-उपाय है। यह वास्तव में योग है लालिक रोह के व्यवस्था हो जाता है तो लोकिक मन का उत्तरलिक धारा में उद्धार-उद्धारले शरीरिक हो जाता है। उसके आध्यात्मिक दृष्टि के स्थिरता अलाने का कार्य नारो-नारायण का शरीरिक पथ, जो कि आध्यात्मिक पथ है उठाता है, को करता है उसी नारो जी द्वारा लूप बनकर गया है।

दिनकर जी मे "उद्धारक काव्यग्रन्थ का पूर्वकाल मे है आध्यात्मिक पथ के नारो-विकास का बहुत रच स्वाभाविक हैं - ए नारो नारा को कृत्तक लुप्त नहीं होता, न नारा द्वारा वार्तान में व्यवस्था मानता है। क्योंकि वास्तव में जो नारो को नारा त्याने को नारो के ज्ञान में रहें नहीं हैं देते, और जो वे मिल जाते हैं, तब यो उनके मनर के रूप त्याने का पार कहते हैं, कि ज्ञान होता है तब रूप नारो-नारायण के धाराले पर अस्तित्व है । ० ० ० ० ० ० नारो के भोला एक ब्रह्म नारो है।

-----------------------------------------------------------

12. उवशी चिठ. निक्षण परपुंछ के लिए, प्रेम की उत्तर गद्य आ अनुसंधान करने के लिए विषय गद्य से और अनुसंधान करने के लिए तैयार गया है। यद्यपि प्रेम के उत्तर प्रेम वल ब्रह्म और ब्रह्म का वह है दूर-दूर तरंग का स्वरूप कर लो है और भूती रणन रूप के लिए अपने कारण जो रहता है। उवशी चिठ. एक अवप लोक का वर्णन है।

उवशी चिठ. में प्रेम को इलोक-शिल्प का आव्यूह है और उसे आव्यूह उत्कृष्ट आध्यात्मिक पथ हैं।

"रामलोक" - मैरा काव्य-यात्रा, ४० ॥
हो आयोजित उत्तम आत्मात्मूल है। इस नारे का संधान पुस्तिका जल पाता है, वह शरीर को धारा उबाल-उतारते, उणया के समूह में पड़के देता है, जब वह दैविक वैज्ञानिक धरती पर पड़ते तो वह पूर्ण क्रीड़ा में पड़के दैविक धरती पर आता है। नारे का यह आत्मात्मूल रसायन आदि हृदय वाला जान्यात्मक पद्धति है जो दिनकर जो के काम के समूह के साथ विविध हुआ है।

दिनकर जो के काम के नारे रातिकालिन नारे कामात्मक वैज्ञानिक उपयोग के अवधारणा नहीं है। उसका आत्मात्मूल उपयोग तो धारा-धारा का है। नारे के बल्ले व्याप्त उदार जान्यात्मक पद्धति है प्रकाश है। जिस प्रकाश के फ्यूजन को क्रीड़ा पर जगह की व्यक्ति का नौकर तोड़ते है तो हौकर फायन को अंत में होता है, इसी प्रकार नारे की भूमि नारे के उदार आत्मात्मूल नहीं जरूर है वह आत्मात्मूल दृश्यो में भी होते है। उनके मात्र स्थरता आत्मात्मक पुस्तिका मात्र ती को होना चाहिए।

दिनकर जो उस नारी काय्यकार्यों में नारे के स्थल वर्त्तमान का हो निकास करते काम के समूह में दिखाया है, उनके दृश्यो नारे के आत्मात्मक पद्धति काम को नहीं करते हैं। उनके काम के नारे पुस्तिका को नारे के पारत जगत के प्रति हो साधन आगत होते रहते है। वह उनके आत्मात्मक पद्धति के संधान काव्य वाले भी नहीं पाए। दिनकर जो के काम का यूत उद्देश्य नारे के आत्मात्मक पद्धति का

उपर्योग - मूर्तिका, पृष्ठ से 2
कैले के रातिकालिन धारा जित है वृक्ष पुस्तिका आगे।
प्याल लोग कौट नारा दे गड़नोय, मात्र बैठे के बाज बुजुर्ग।
कैले नारा न लगे कल्लो, दृश्यो दैविक हरे मात्रामबाज।
कान्ह के नारे पक्षे कान न दौड़नो, पुस्तिका दैविक दैविक जाए।
हिन्दी काव्यित्व का विवाह - राति पुस्तिका कवि मात्राम, पृष्ठ से 2
उत्क्रम दिखाना राहा है। उनका काव्य नाराज है जब विद्वान गौरी ने स्थायी रूप से रमने के लिए नहीं कहा। उनका उसका काव्य नाराज बनता है जब स्वाधीनता नाराज के अध्यात्मिक पता की प्राप्ति का उद्देश्य उपयोग है। उनके काव्य को नाराज का सूक्ष्म-रूप है प्रशान्त नहीं है।

दिनकर जो, नार वाले के ब्रज की अंगुलत खंड ताला आकाशिण है, उनका अन्याय कारण, नारा के इस अभ्यासातिम पता को ही मानते है।
उनके अनुमत नारा के नाराज-रूप आकाशिण के दृष्टि हो पुरुष्य उनके बारे आकाशिण बाहर जाता है क्योंकि उनके अभ्यासातिम व्याप्त आध्यात्मिक रूप पुरुष्य को पुरार्ता है।

इसलिए, जब तब हम
इंद्रोजय विभूति का प्रधार देखते है।

वादना केम्ब्रिंग
कौटा-मोटा अतार देखते है।

न भी कोई हैले
अकुल्ला या सूक्ष्म साहो है
करते हैं चूर और काहे में।


1- क्षेत्रों चिन्द्र, रत के पार पर न्याय हो लाना हूँ अच्छी जो,
   छूट या दो छूट पारी हो
   न गाने, कितना जल्द है नाद यह जाता,
   अभाव भो न समझा?

   दृष्टि का जा वैय है, वह रात मौके नहा है
   श्रृंखला का आरामा का नाराज आरामा नहा है
   उसका बहुक, पु.४५

2- जगत के प्रशंसक, चिन्न है चैन आलोचन में,
   और पुनः वह शान्ति, नहा जो पते यह हिलते हैं।
   और बच युग-युग के परिप्रेक्ष्य है उत्क्षेत्र हरो को,
   और बच वह भाव, गोरे है पते लुके हैं जो
   पुरात नारो नहा, प्राणी को कौशल कविता है

   उनके - मूलतव शृंखल, पु.४५

2- अल्लाह की कंधों, इस्लाम की देढ लाखों अल्फियल, (80 लाख) 80 लाख
नारो के प्राति मात्र को दुर्गारक्षको मात्र को दुर्गारक्षको मात्र को जागृति हो दिनकर जो के अन्वेष इस्तेमालो भ्रमण को जागृति है। नारो के अवतार इस्तेमाल उपासना हो परम्परा को उपासना है। इस्तेमाल महत्व कर्ता कथा नारो के बनके मैं व्याप्त आध्यात्मिक पथ हो उपासना करना, दौरा एक परम्परा को उपासना के एक उद्वेठ हा मार्ग है। ततंत्र-दिनकर जो के अनुसार महत्व दस और दुर्गार रस के कई तुल्य अन्वेष न होकर र्सत्त हो भ्रमुल है। उन्होंने इस लम्बू का उत्त्वरण उपदास-संस्कृत-काव्य में अति गुन्दर रुप लिखिता है। वहीं नारो-प्रेम की आध्यात्मिक पथ को परम्परा के भव्य दौरा उसो प्रकार आरा देता है, जिस प्रभाम की योग्य वैदेशक जन्म पर प्रभाम का योग साधना है परम्परा तत्व के दौरा करता है। नारो-भावना का साधन है नारो-नाराय तथा परम्परा देने को लोटाव करता है। वही उपदास आध्यात्मिक पथ है। यह भावना रजस्तोक नारा-नाराय के आध्यात्मिक पथ है ठोक निश्चल-जुलता है। दिनकर जो के महत्व और दुर्गार रस का उत्त्वरण उत्त्वरण है-

कविता मक्ति को लिखित
या दुर्गार को,
भवना रक गो है,
जो उर्दु है जलते है

० ० ० ० ० ० ०
वीर प्रास्ता नर को करना
या नारा को,
भावना नारार नहीं
कुश होते है।

इस्तेमाल उपासना बारे कन्दरार्य उपासना होकर की जाय। जम्बा नारा के मूल में विफलक आध्यात्मिक पथ का अवतारित विलास करने की जाय।

---

१-सम्भावना के उपासना - भवना रजस्तोक, दृग्भार आलमभोगन तेजसारेय निकुल, पृढ़ रूप
२-हारे की दरिद्रनाथ - नीलकोटिवत (२००००) पृढ़ रूप
है कह परम तत्व को प्राप्ति का हो चाहिये। नारा का स्थूल शरीर जो उसका एक पात्र अभिव्यक्ति है। नारा पुरुषों का दूर्वाग्य का उपयोग जनेन्द्रिय शरीर के प्रथम जीवन के माध्यम से हो करता है, यह उसका आध्यात्मिक रूप है जिसे दिनकर जो ने कहा काय्य में पूर्णत्व उभरान उत्तर किया है-

"दैवता एक से शिव जस पर चिंता आन्दोल हो जाती है, यादित्य के सौंपन को है आया, स्वर, हंसिया, कायम है। परिरण-पात तथा तत्त्व उस जन्म तक उठ गये हो रहे हैं। दैवता प्रेम का दृष्टी है, चुम्बन है उसे आज़ादी चुम्बन है।

"किंतु पुण्य सुनिका तब न को दृश्य तरंग पुनःरूढ़ हो रहा है, उस दिशा लोक तक है प्रेम को नाव उत्तर है जाता है।"

दिनकर जो के काय्य का सुविधित अभिव्यक्ति करते हैं ऐसा प्रताप होता है कि नारा के इस आध्यात्मिक पथ के दृष्टि पुरुषों के व्यक्ति आधार है। वात ऐसा हैकह है। यदि इतना स्वरूप हो नर का आध्यात्मिक होना मुलम हो जाय, तो फिर प्रथम तात्कुल राशियां हो जाय। नारा के आध्यात्मिक पथ को प्राप्त करने का साधन दिनकर जो ने अपने काय्य के विभिन्न अवस्थ दिखाया है परन्तु यह आयात्मिक प्रेम निगुण का वृद्धिक प्राप्त हो चाहिए तथा वह नारा का यह आध्यात्मिक पुनर्वापन हो पाता है।

गर एवं नारा का स्थूल शरीर जंग नृपरमुक्त इस प्रकार तनाव हो जाता है कि कहीं कहीं को स्थिरता अवस्थ हो जाता है। नर-नारा एक दूर्वृह के आत्मनेत्र के बड़े होकर शारीरिक तुषारां तूफान उसे उत्तर उठाते है और जहाँ स्थिरता व आकर नर-नारा के आध्यात्मिक शौकिय के इतना हरीश हो जाता है फिर दोनों को लोकिक मात्र का कोई जान नहीं रखता है। नारा का आध्यात्मिक पथ ते सम्बन्धित है जंग को प्रस्तुत किया है।

उद्धो - तुला बंक.868
2- वशों, 80 वशों
दौ दापुः कीस्मिम्मलित ज्यौति, वह एक जित्ता जब जाता है,
यदि के आयाधि रत्नकार में यह देश दूर बने लाते है।
दौ दृश्याः वह दूर राजनिन, तन श्रीमद्, सुभ्रा अलिक्ष सुन से,
वल्लिवन आपसे ब देखते, न कोई शुद्ध निकलता मुख से।

क्लिन्तः पानाः वह दापुः श्रियादिक ये बार तन्न जाता है,
गौरर अरोर में निपत आचर तुलको रथको दिलाते है।

महाकाव्य दिनकर जो दापुर रस के सिव खस्त कवित!।
दापुर रस की

प्रकल्प वोलस्वते नेतृ-काव्य-रत्नाकर में एक उच्च कौटि का गरीब प्रहार किया है, वरनु उन्हें सानपोठ पुरस्कार नारो-मायरा के आध्यात्मिक फश के बुद्धिमत्त महान्त गुज्ये उद्वेशे पर प्राप्त हुआ है।

इससे स्पष्ट है कि दिनकर जो के काव्य में नारो-मायरा की सुपृष्ठित विकास मिला है जो पूर्ववस्ता फिरो कविताः में उस रूप में नहीं मिल पाता।

दिनकर जो को आल्पा मो नारो-प्रथान काव्य में बड़े होर्यते थे।

इस वात को पुष्टि उन्होंने स्वर्य की है -

जिनमें उपेशो काव्यराल मुनि जानपोठ पुरस्कार मिले के लोग इस प्रश्न की विशेष रूप में राशिफलित करने लो हैं कि वाच दोर भूमि अन्य दोनों रस्ते का निकाय मे नै बीजित किया है।

यह सब है कि स्नातिक मुनि वैद्यमानिक को क्षेत्रण कवितार्क काव्यराल प्राप्त हुई, किन्तु पुरस्कार मुनि उद्वेशे के कारण मिला।

किन्तु यह वात असीम नहीं है वनस्प ज्ञायमान से हो वार बोर भूमि दोनों
हो मुनि बारो-राक्षसे हे देखते रहे है।

उसके एक चार में नै कहा भो था कि
को कोति तो मुनि इक्षुकार मे मिले, किन्तु आल्पा मेरो रश्वन्तो ये बसते है।

दिनकर जो के उसक काव्य है हो स्पष्ट है कि दिनकर जा मृत मे नारो

1- उद्वेशे- कृत्यार्क, पृष्ठ ३६६
2- रश्मलोक- मेरो काव्य-यात्रा, पृष्ठ ३०
काय्य के सिवा सफल कविता भी। यह एक अला बात है कि दैव-भक्त होने के नाते विवशता में उन्हें दैव-प्रेम ने तम्बूरलैंड कवितार्थ तिलको पड़ा। वास्तव में ऐसा कि उन्हें स्वयं का रो फिरता है कि उनकी जात्मा नारा प्रधान काव्य-रूपवाते में हो निराध करते है। भेजना का उपक्रम उनके नारो-भावना के प्रेमों ने होने का सफल परिणाम है।

यह चिंता भी बुका है कि दिनकर जो नारो-भावना के बारे में प्रेमो थे, मला इसकी फिर यह दैवी समस्या था कि नारो के वाम्यातिमक पदा का वे सफल विवाह न कर पाते। दिनकर जो को नारो के उत्तल काव्यि रूप उत्तमन्य्व में वाम्यातिमक तत्ता का मान होता है, तबो तो वे उसके रूप रूम्यूदन्य के प्रति एक तोड़ केटपटट के तांत आक्रमण होते है।

यह फूलाँ को दैव मनीरण,
कितना भुन्दर है रात।  
इसके पशु स्वर्ग, परिया,
तुम हो का भुन्दर कल्याणा?

0 0 0 0 0 0
बरे, मनसा कब, तौ फिर क्या,
बाज नहीं राबधार बहे?
कल फूलाँ पर फिरे न क्या,
कविता तिलसि लो दोवानी।

दिनकर जो को नारा का यह वाम्यातिमक पदा उनके शारीरिक तीर्थिक पदा से करकाट नहीं, कित प्रमिति तीर्थिक स्तर तक पुस्त जाता है, इसको समस्या प्रक्रिया एवं इसके वाम्यातिमक विवाह का विधान प्रसिद्ध काव्य-गुण्येदिवसि ५ में मला प्रमिति चित्रित है। नारा विधाता के ऐसी पुस्त वक्तक परम रामपाल अन्नदीन्या नारा है जिसको और न आक्रमण रहे किना नहीं।

को दैव मनोरण.
कितना भुन्दर है रात।  
इसके पशु स्वर्ग, परिया,
तुम हो का भुन्दर कल्याणा?

0 0 0 0 0 0
बरे, मनसा कब, तौ फिर क्या,
बाज नहीं राबधार बहे?
कल फूलाँ पर फिरे न क्या,
कविता तिलसि लो दोवानी।

दिनकर जो को नारा का यह वाम्यातिमक पदा उनके शारीरिक तीर्थिक पदा से करकाट नहीं, कित प्रमिति तीर्थिक स्तर तक पुस्त जाता है, इसको समस्या प्रक्रिया एवं इसके वाम्यातिमक विवाह का विधान प्रसिद्ध काव्य-गुण्येदिवसि ५ में मला प्रमिति चित्रित है। नारा विधाता के ऐसी पुस्त वक्तक परम रामपाल अन्नदीन्या नारा है जिसको और न आक्रमण रहे किना नहीं।

- दैव मनोरण - पृष्ठ ८६
रहता ।। उनके इस विन्दुय विधान को बच्चे प्राध्यो जो सभी पूर्वतरूप प्राप्त नहीं कवियतो अने काय्य में को है। ईश्वर बने ग्रामोत्सव नहीं देखा भी इस बीते विन्दुय विधान है अभी नहीं रहा है। नारायण के इस विन्दुय के प्रति आकर्षित दोष पुरुष प्राप्त भान -भावना को बच्चे जाग्रति प्रबल हुझू है उत्सवन होने लाता है, और पुरुष उसे शारीरिक आर्कित के लिए उत्साहित होने लाता है।

नारायण के बायाट्स्क विकास का प्रकाश भाग ।

---

शारीरिक नारों के प्रति पुरुष का यह प्रबल जागीरीय एक-प्रकार नहीं होता है अपुरुष नारों के प्रति जिस प्रबल इच्छा व जागीरीय होता है, उस प्रति भावना भी उसके प्रति जागीरीय होता है। यहाँ पर यह बाल विभाजन हुफ है देखी है कि जिस प्रति पुरुष शारीरिक बुध्दी नहीं होता है, तब ठीक उस प्रति भावना भी पुरुष के कायाकल्प रूप स्वरूप पर हो नहीं होता है ? इस स्वरूप पर नारा की बच्चे इसके को वरण करने का उपलब्ध चौक है। इसका बदलाव का महत्त्व विदित ने अपने काय्य में प्रस्तावित किया है। नारा पुरुष प्राप्त भावना भी उसके कायाकल्प रूप-रूप स्वरूप पर नहीं होता है, जब हुफ शालीग्रहण को बन्ध बनायें है। अतः शारीरिक रूप का बाल्रीक शक्ति का दर्जा करता है। जिस पर बच्चे भावना को बनाये करने का प्रतिभा नहीं होता, तब हुफ शालीग्रहण को बनायें है। यदि इसके प्रबल नहीं होता, तो उसके उत्सवन होने लाता है। अतः पुरुष का रूप शालीग्रहण के प्रदर्शन करे।

---

1= शालीग्रहण का प्रवचन - लक्ष्मी पार्वती, पुरुष
रचना है जिस प्रकार दिनकर जो के काव्य को नारो मैं। गर्वमात्रा तुलसी-दास को धीमा तौंत तब तक नारा का वरण करने के लिए तैयार नहीं, तब तक कि पुरुष अपना शक्ति का प्रवर्त्तन कर भूषण भा नहीं कर देता। लड़-बड़े तापित वौन्दयावन राजा—महाराजा जन पुरुष को नहीं ठोंच पाते हैं तो जनक जो तो एक दम तेज़ हो चारण कर देते हैं।

दिनकर जो के उद्वेशों का काव्य है भी नारो के दरार नर कौण करने का इसी प्रकार का चित्रण है। एक चार जब उद्वेशों को एक राजास अपना भास्व में भर कर उठाता है। वह तब जब उद्वेशों को कहता पुराण को राजा पुरुष का नहीं मानता तो उवाज़ों का देव कर दिया। उवाज़ों का उसके शक्ति तो मुख्ति को देख-शक्ति मुख में तुल्य में हो राजा पुरुष को और आकर्षित हो गई।

---

1- अब जीन कौ-उद्वेश माने महानो, दीव विशेष महो में जाता।
तक आए निक-निज गृह वार्दू, लिसा-न विधि वैदैर्थ विवाहू।
रामचरित-मानस—बालकाण्ड, पृ. २४९

2- "नाश" जाता है कि का देव तक हुक्के ने घर है
लीट रहते थे जब, हर्षने मंत्र देव कर वे,
ट्टा लुपछ ध्येन का हमको त्रास आरम्भ देने कर,
वृत्तुर्त्त गृहा ले गया उद्वेशों को नारी कैंट कर।

0 0 0 0 0 0 0 0 0 0

वै उद्वेशों का काहर तुल्य के प्रतिकोण के, मुक्तिवल के,
मुक्ति हुए उद्वेशों हमारो उद दिन काल-कल ते।
उद्वेशों—प्रथम अंक, पृ. २२

3- पुरुष राजन को देश न वह रह तो हम आन अने में,
दूसरा गह बुरा पुरा का शौका निर्माण के तपने में।
उद्वेशों—प्रथम अंक, पृ. २३
नारो के पुरुष को वरण करने को यह मापना भी दिनकर जो के कार्य में छू लराहनेय है। नारो मांसवल रूप-समृद्धि को न राह कर, पुरुष के आक्षेपलोक रूप से ही की बात, यह उसके मापना का चरम विकास है।

उन्होंने जब पूरा रूप है आक्षेपलोक रूप से ही की बात, यह पूरा रूप का अभाव भी नहीं होता है। वह अने स्वाहृतकाल पूरा है पुरुष के मिलने के लिए व्यक्त हो उठता है। वह प्राण करता है कि यदि वाज व-था सम्भक तक वह अने पाति देव को न पा उक्तने तो ज्ञान शरोभर-रान्त ठहरे कर देगा।

दिनकर जो के कार्य को नारो तृषिक्षा मापना के हारण-राणा के चरम विकास है जो आमशालिक पुराण विकास के पदार तक पुरुष पालो है।

नारो-भावना के इतनी हो पर भी उसने एक रैवंश कालिकी आक्षेपण होता है कि पुरुष उसको और आक्षेपण होते हो समलु पुष्प-छुप मूल गलत है। पुरुष को प्राणक के इलान नारो को पाति हो जाति व्यक्त मूल हो जाता है। उसके बन्दर नारो-भावना के मांसवल अक्षक्षण के अनुसार धर्म के अनुसार व्यक्तक हो जाता है। दैत्य के दारण उद्ध बने फे जातो दूर उघड़ों को भागण भाव की ज्ञान-देवकर पुरुष के बन्दर तथा व्यक्त काम-भावना इतने प्रवक वैक के साथ प्रावहित होने लाते हैं कि वह उसके रैवंश के ठबकने लाता है।

वाज्य है पुरुष प्रथम सम्भक यह नारो के उप-शीन्द्र यह पौष्प अम्ल होता है, और उद्ध यह यह मोह नारो को प्राप्ति के एक प्रवक कारण यह जाता है, परन्तु ना को प्रवक शीन्द्र का एक कारण यह भी है कि नारो के उपर रूप स्वल प्रमुंद्र के भावना एक रैवंश कालिकी अनमो प्राणक निकरता है कि यह

1-उघडो - प्रथम अंक ¹, शू ²
2-दैत्य करे वाज्य, कहन में परिताप प्राण यापणे? अनुपातन में पदें स्वपन कह तक जली निर्मलांगे?
3-कह, कह करना हूप धरण तो आके भूले कलशता, जानि, आलिंगन से कह तरने हरिणे? उघडो - प्रथम अंक ¹, शू ²
पर का प्रभुता इस्कैंकर और भो अधिक वैज्ञान नजारे रखता है।

जब नर-गायों को यह आकर्षण लेता रहा चरण वापस तक पहुँच जाता है, तो गायों-भावना के अल्लाहात्मक रिकार तक पहुँचे का प्रयत्न चरण वापस ही जाता है। जब नर-गायों एक दूरी के प्रयत्न-सम्पर्क को स्वीकार करते हैं तो वे आरोपी प्रयत्न का अतिरिक्त करता चाहते हैं। दिनकर जो के काव्य में इस आरोपी अतिरिक्त का बढ़ा हो उकसाए जाते हैं। परिश्रम-पाश में वर्ते नन्द-गायों पाठाल-उपमत्त को चरण वापस तक पहुँचाने का प्रयास करते हैं।

गायों की वर्ते नर को भी यह स्पर्श प्रभुता कोहर है उठान प्रार्थना कोहर तक पहुँच जाता है। प्रशांत जो ने मो "कनाया" ये वे वंकेल दिये है। पुढ़रा एवं उव्वी "जब देहान कामिक वन्न प्यार में लगन को जाते हैं, तो उव्वी इस प्रार्थना कोहर को वाय वंकेल करते हैं। नन्द-भावना के चरण उच्चारण का यह प्रताप है कि वह अधिक संभां के मास्कल रूप मौनद्व दे स्तर पर अमी इज़्बा को नहीं वर्तमान हो। नन्द-भावना नौ के मास्कल स्तर में एक बलशोकी विष्णु मय।

--------------------------

1- "000 और यहों प्रकार, जब कोई नन्द-प्रक्ष्ण भरो ऊनहर्व दुर्गित हैं किसी पुष्करण को देख लेते हैं। तब जगद्ध हैं जगद्ध पुष्करण के भीतर भी कोई कल्पक आग उठता है, कोई कणिता सुनाए लगता है, तौनद्व का कोई तुलना काकर उसे गाया के पास ले जाता है। इसी काम को तै निरा-कार कृताज्ञ है, वही उदात्तवर्षण के पूजन उपाय है।

उव्वी - मूर्थिका, १० व-४:

2- यहाँ प्रार्थना निश्चय करता
रागारामण चैतन उपासना, ।
00 00 00 00
भाव मूर्थिका इस्कत लोक को
अनन्त है सन पूण्य पाप को,
ढलते सब, द्विभाव प्रारीतिक वन,
गल जाता है मुहुर लाप को । "कनाया"- रहस्य, १० २७२
आकर्षण का बुझा करता है, और यह विद्वान स्पष्ट हो उसकी लीलिक अंतर से ऊपर पड़ता है।

अब पुरुष्ण को नारायण भावना को नारायण-वीर्यक गुणम पन के परिचित मैं पूरा है तो पुरुष्ण को स्थिति लीलिक त्वर से कुछ ऊपर उठ जाता है और उस अन्यो उस स्थिति कौशाम्भ कर कि त्वरक्षत्र विनय हो गेले लाया है कि इस समय बस किस लोक नहीं जा गया है। यह लोक लीलिक अंतर है मिन है। इसलिए नारे के आभारित पदा का लाभ पुरुष्ण उठे वार-पीपुली व्यंजन हैं देखे लाता है। यह लोक वहा हरा-वहा रहने वाला नन्दन वन है, जहाँ पृथ्वी भाणा चरित्रालं दो चरित्रालं विदाई देता है।

दिनकर जो ने इस लीलिक विचारा किया है, यह लोक नारा-भावना की बायु विचारित कारण का हो परिणाम है -

"यह उठाया गया था,
बुलंदों ने फूटने लाभो मुख वुंछित्य जमिन यहै,
याद जाता है मदिर उत्तारस ने फूल जुगा जावन,
याद जाता है तरंगिल घास के रोमर्ष क्षण,
वर्णभ वर्ण बल्लरो ने फूल ते खिली हुए गुल,
याद जाता है निशा के ज्वार ने उन्नास का वज्र,
कामार्थ प्राणा ने हिल कोहो है।"

नारा-भावना के लीलिक पदा को दिक्कर ना कि मौसै उत्को स्थाय-भावना से उठाकर बालिक गुणम भावना तक ले गये है, ने कहे होत हैं को पुरुष मुखी दुःखित कोण का फल है। नारा-भावना के उक्त बालिक जाप्तम पुष्करकर

---

2- "यह विद्वान स्वयं तिरित है पाकर जिसे त्वरा को नाक दूत जातो, रोमर्षिया दोषक बल उठाई है।

वह आरोप अन्धकर है, जिसे अंध आरोप पर,
हम प्रकाश के महाधिन्य ने उतराने लगते है।" 

उद्गो - वृत्तय जंक्व, ५००७
2- वहो, ५०६
नर-नारी के शारीरिक अवस्था के रसायनहीन की भूमि जाता है। उसे मांसक रसायन का कोई भी जान नहीं रहता और यह नारोश्रावना के सम्बन्ध में यह दौखन लक्ष्य है कि यह अलौकिक रूप भिन्न रूप का प्रतीक है -

"वौं, तब वहा
न जानै, यान की गाता कहैं पर।
सत्य हो, रहता ना यह जान,
तुम कहै अपना या काम न हो।
० ० ० ० ०
सर्स मैं बौरम, तुम्हारे वष्णु मैं गायन भरा है।

नारा-भावना के अलौकिक अवतरण है प्राकृत यह तालाब देवी लोक कैसे मानना है और दिनकर जो हसी को राम-लोक मानते है और यह नारा भावना का आध्यात्मिक रूप है, जिसे भक्त पाकर वाक्क आध्यात्मिक हो जाता है। इसका समान इतहासिक है भो की बा शकता है। यह लोक-पुरुष अनुभूति से परे तो लोक है। यहाँ वाक्क को अनुक-दुनाह सर्वां आते है। यह लोक तो वाक्क को उस अलौकिक स्थिति में स्थापित कर का देता है, जहाँ यह नारा-भावना के आध्यात्मिक विवरण राम को होता है।

वाक्क पुरुषरात्त हृत लोक को अलौकिक शोभा का चित्रण करते है -

"कौन है यह वन वर्ण हरियालियाँ का,
भूमि फूलाँ, तबलती डालियाँ का?
कौन है यह देश खिसक वारियाँ भुक्क को निरन्तर,
बाहुरागों को घार है नक्सा रहता है?
कौन है यह का वन स्ते तैय मै जाता मुक्त हो का,
चाँदना नुमकार कर बलता रहता है?

----------------------------------------------
1- उत्तर - तुलौश अंक ३, पृ० ५२
2- वैदिक,
फूल जै की बुद्धा को आश्चर्यात्मकी भावना पो बाप्पा पन, कौ
इस लोक के दर्शन करती है। नारी की आश्चर्यात्मकी भावना को प्रवाह जो
ने भो मुझे विकास प्रदान करने का सफल प्रयास किया है। दिनकर जो उस
प्रवाह जो शेषदेश नारी-भावना के आश्चर्यात्मक पता को हो उकाचारीय
करने के रात है, परन्तु अन्तर केवल मार्ग भा है। लक्ष का वह मार्ग काम
के चर्मालीकरण के सम्बन्धित है तथा दूसरे का आनन्द वादो जोवन दर्शन है।
दिनकर जो के अलीक लोक है प्रवाह जो का लोक मो सिखता-जुलता है -
उद्देश्यो लोक -

"जोर हिलते म पहों का गान फिर देता बुलायो,
ख्य वहों का है जहाँ पर फूल खिलते है।"

इत्यादि है।

कामायणी लोक -

"चिर-वर्षत का यह उद्देश्य है,
पतंकर होता एक और है,
वेदात्म हलाल यहाँ धरे है,
पुल-दुशंग चंदों एक ढौर है।"

0 0 0 0 0 0

इत्यादि है।

किंतु कौन यह श्याम देश है?
कामायणी, कवाजो उसमें,
क्या रचना रहता विशेष है?

1- उद्देश्यो - तुलसी औंक, पृष्ट ५५।
2- कामायणी - रचना, पृष्ट २७४।
दिनकर पूर्व के विद्वान् कवियें ने नारो के आध्यात्मिक रूप सौंदर्य के दृष्टि नहीं किये। नारो में आध्यात्मिक पथ के कल्पना तो वृक्ष दूर की बात रही, उन्होंने तो नारा का भ्रम को आराधना में रौंगा हो माना। महात्मा का शब्द दिनकर ने दिया निष्कर्ष रहे फिर उनके परशुराम पाद के मात्र भें धार्मिक वक्ताओं। गौतमाचरण शुक्लोदास ने भी आध्यात्म को आराधना में नारो का दूर हो रहना चाहा। दिनकर जो ने नारा के आध्यात्मिक पथ में एक कवियां को नारीशुभावों सम्बन्धित संस्कृति मान्यताओं का महत्व परिवर्तक किया है। दिनकर जो ने उसके अनुसार नारो आध्यात्म की आराधना में कथा रौंगा पाद नहीं वन उत्सहो। नारा तो स्वयं आध्यात्मिक स्थान भावना है जिसे प्रत्यक्ष कर नर-साक्षात्कार आध्यात्म की जाता है। जिन में भी आध्यात्म के संस्कृत नर-जुड़ नहीं है, वे सब नारो के आध्यात्मिक रूप के अर्थ करते हैं, उन्हें ही नारा के प्रति अपने भाव को अंधकार बन जाता। दिनकर जो ने नारी-भावना के आध्यात्म

--------------------------------------------------------------------------------------------------------

१- नारो धैर्य तेज़, धुःधारिक शब्द ही है।
कांग नवाय देश, कारिज कोह ना तेरे।

० ० ० ० ० ० ० ०

"नारा भोजन स्वाद मुख नारा धैर्य रूँग।"
कृतां धैर्यं पक्षी तिरंगाण, धैर्य है मूल्यस्त धैर्य।

"कवियों गुनयाथले" पृष्ठ ४८

२- मन पक्षी तेज़ का रोज़ते।

० ० ० ० ० ०

मुहँ-विल्लमद्ध जाँच नवाय स्वायत्त रत, नकरू नैह सब होते।
जलू तौरह तांती पात्र, धैर्य न के जब होते।

"विनय-पत्रिका" पृष्ठ ३१६
जब रामकुमार गुरुधर नारो के आध्यात्मिक ज्ञातू वे पहुँच जाता है, 
तो उसे मूल पवित्र स्त्री वालिस्न का पैदा आभासित नहीं होता, न वहाँ मुहूर-
हुँ छो अना प्रभाव का पाता है। नारो-भावना के वर्तन विकास का यह आध्यात्मिक फूल हो परम प्रभु का आध्यात्मिक पता है। इस पता वे पहुँच कर दागक्ष केश-पृथ्वी से जाता है। यहो नारो के इस अलोकित फूल की 
अनन्दनीय स्थिति है। जो रामकुमार पुरुषों की दैश-काल का अनुष्ठान उठाकर 
एक श्रद्ध की राख स्थिति में पहुँच देता है जहाँ उसे किसी प्रेम का दंडनामक नर्स 
होता है। रामकुमार की हंसितात्त्व स्थिति तक नारो की अत्याद्यनित स्थिति 
शा पुंछ वालों पाते हैं, जिनका उदय विचार नारो के महान प्रभु उक्तों में 
पिलता है। नारो का यह आध्यात्मिक लोक उक्तों के पहुँचते हैं वहे उल्लेखनीय 
है -

"हम त्रिलोक वातों, त्रिकालाबर राकार वर्षा है। 
भक्तिपूर्व, वालिस्न, तीनों के राकार हैं। राह 
रहीं संपूर्ण वनों बीकियाँ, क्षेत्र, जगुंजाँ हैं। 
कुंप तों रंग क्षणम बिचिया को कहाँ चमेट घरे हम।"

दंडनामकी की अलोकित भावना की अन्य प्रसाद कायम मै जो 
परिलक्षित हैं -

"भाव मूलिका क्षणों लोक का 
केनो तेल पुण्य पाप को 
दलने चाह, रामभाष पुष्प अवढ़ 
गल ज्ञाता है नदी ताप को।"

फूल के चित्रण में उक्तों के पुल हैं वन वन विद्यान कलियाँ की उत्तर 
दिलाया है। उनका उक्तों सत्यार्थ कहता है कि नारो ओषधालंकार को जारा-

1- उक्तों - ठूली अंक, पृ. ७० 
2- कामायनो। रहस्य, पृ. २७२
वना को कभी राहू नहीं चलती । नारो के दूर रहने वाला युग द्रष्ट्व की कभी नहीं जान सकता है। विद्वानों को यह धारणा प्रस्तुत नहीं है कि किस प्रकार के नारो का रेतन कर दिया, फिर वह वास्तविक जान को नहीं पा सकता है। अतः नारो के प्रति नए के इतिहास मानना नहीं रहा चाहिए । क्योंकि नारो के बनते वह व्याप्त रूप में वास्तविक नारो भी है जिसे पाकर साधन नर रामचन्द्र हो जाता है।

यद्यपि नारो उचित करने पूर्ववर्ती काव्य पर तो ऊँचाई प्राप्त करते हैं कि किसी भी समय रेतन नहीं रहा चाहिए नारो की अस्तित्व नहीं था। नारो के अस्तित्ववाद एवं विश्लेषण का सुन्दर कल्पना के रूप में पुण्यित था। रेतन से स्वयं भूल जाते जब तक वह द्रष्ट्व का तात्पर्य का दृष्टि-रूप है तब तक ध्वनि का तत्व नारो को हो देना है। उपमानात्मक प्राकृतिक उपयोग में वली-किन्तु दृष्ट्व रूप में नारो ही कौशल विशिष्ट हो रहे हैं।

दिक्कत नेत्री नारो में वास्तविक युग की ही युगान्त मानता है। नारो का स्थलाकाय धान्दी ती प्रकृति ने उसे जाकरण का केन्द्र बिन्दु नामने।

उद्देश - उल्लोक औक, पृ ७७

२ - कब था रेतन तब कि जब भूरा अस्तित्व नहीं था तब जागरण वह धार्मिक दिन रहा तो यह है ? कौन पुरुष विश्वास के भीतर उनके कालक नहीं है ? कौन लोक, कौन नामूने अपने कार्यों यहाँ पर ? उद्देश - उल्लोक औक, पृ ५३
के दिंदिया है। राजकी जन साधत तरारो बन के लिए आरक्षण की होता, यदि उसके कार्यकर बनने वाले वातावरण न होता। उसे करघें के कारण यह नहीं होता कि जन साधत तरारो बन के लिए आरक्षण की होती। यह तो उसका का गोप्ने बन के है। उसा प्रधान तरा जो आध्यात्मिक है कम्बिन्क्स है, जो कि इस जगत का उपस्थत जीविका सवा के लिए स्थापित करता है।

तरारो सी त्वमात्रा का अधिक बनाया है। यह तो समाज को मूल है कि वह उसे सर्वोच्च घटना बनाया है। तरारो तो निम्नता को कृत्त्व बनाया है, जो पुरुषों का जान से ज्ञाता जीविका व्यक्तियों का रही है, कि समाज की तरारो के आध्यात्मिक पता को सम्बन्ध राष्ट्रिय विघटित-विपश्चितकों की है, और यहाँ से होने से जीवन का मूल नैदेश होना चाहिए जिसे वह जीविका जान की पुष्टि करने की तरारो के आध्यात्मिक बन के रामण नहीं बने।

पिन्कर जो से पूरा अधिक तरारो इविद्वान् अविवाहित ने उसके रूप के लिए का प्रयास नहीं किया, अतिकृत है उसके रूप विभाग के देश मान से हो जबरदस्त हो। महात्मा क्वर दास के उसके रूप से इतना छोटा होने के कि उस्ताने आध्यात्म का उत्पन्न बनने वाले योग राधकृष्ण की तरारो का नाम लेना भी पाप बनाया। विदेश आश्चर्य का बाल है, जिस क्वर की तरारो ने जन्म दिया। अपने उद्दर्श उसके वस्त्र-भार की वैकारी बनने रहे एवं वह विदेश की तरारो को अपनी योग-साधना जी की नष्ट करने वाली सम्प्रभु की। गौरवो मत्स्योदास की तरारो से ही योग मार्ग की ताकत के लिए दर्शित किया और हमारे हो तरारो को पुष्टि की कौटि में रख दिया।

---------------------------
1- मैं कृत्त्वर, भूखे तुम देह मान केइ हो,
    मैं कृत्त्वर, तुम दूर देखकर तुम भूख को नया रहे हो,
    भागजा की बातकर, मानसिक बनाया नारायण की।

उद्धव - तुलसी अंक, पृष्ठ 63
यह नारो जाति के लाख इन विद्वान कवियों के द्वारा लिखा गया आत्मचेतन व्यक्ति था, जो गुण-गुण के नारो-वाति के बाद नहीं कर सकते।

उसने इनके उपदेश कवियों के उपदेश के कारण नारो के आत्मचेतन कृपा के दौरान जीने, उसके लिए शरीर के स्वस्थ मात्रे से हो गुना करने का।

दिनकार जो नारो के चुने पारती थे। उन्होंने अपने काव्य में नारो-भावना के लौरक के आत्मचेतन कृपा को जो विषय का है, फूट-शाक की रोकीकरण है अतः अग्नि की उसके द्वारा भी सब से पहले।

दिनबार जो नारो के प्रतीक्षा आधार के शुरु ने नारो-भावना को विषय में विस्तारित किया है। उसके सिवाएँ उसे विश्व में पुरुष बादी भी आधार जब तक नहीं बन उठता है, कब तक निःसंदेह उसके आत्मचेतन गुण में नारो-प्रेरणा न हो।

पहले दिनकार जो ने इसे कवियों को, जिन्होंने नारो-भावना को उत्साह का अकादम करने बतूँ उसके उपाधि कृपा को उम्मे को, जो हो जाए हारा है। उसके अनुष्ठान संस्कृत जन्म लेकर विशेष एवं उन्नत की हर जगह करता है। जो बादी ने खुल प्रदान करना, योग को आधार करने पर ध्यान पर-भावना को प्राप्त करना, उसके आधार मात्र है शही अवस्थित है। बत नारो-भावना है नृत्य के बाद उसे उस के विद्वान को जो योगा बाधित था कि इन उच्च कृपा को करने के-फूट वाले मात्रा के बन्ध को कत्वा का एक मात्र बाधी बनां तो? कया नारो के उपचार भावना के पूर्ण सदृश के उपाधि में मात्र का इस संस्कृत जन्म लेकर प्रेरण करना उम्मे था, विशेष रुप से नारो-भावना ने उ। उकाचन लक्ष्यों का साथ कीया, जै जै उसे वर्ष भर बैठकर उसके झल की दुखावे की कार्र रहा था। नारो-भावना को देखा आधार पूरे है, जब जब इस विश्व ने मूल कृपा गुणा किया है। इसके मुख्य तत्त्व

8- जाति फार्म लंबी बुध, जा नर पार् हौस,
भाषा मुख्ति नारे ग्यात कैलाल, देखूस न अह खोड।
कोश- पुस्तालो, लालिश्व, 30 48
मूल-रूप का हो यदि कोई कृतितम उपेक्षा करे तो हसते कटकर और क्या मूल हो उठते है ।

महाकवि दिनकर ने उक्त मूल करने वाले वाक्यों को अने काव्य में नारो वम्भान के लिए प्रेरित किया है ।

श्रेष्ठ वाक्यों को, जो योग-साधना के लिए मूल लागु करेंगे हैं, विकर जो ने नारो- मावरा है भी प्रेरित बताता है । महाकवि का स्पष्ट विचार है कि प्लैक्ट योग-साधना में नारो की प्रेरणा का अन्त में कैद होते हैं । गौरवान्वित तुल्य तथा को योग-साधना करने से प्रेरित थे । कामायीयों के पुनः पहराराज को इस कज़त में योग-साधना का वहाँ पार फिसने दिखाया?

1- जीर्ण तो उस दुःखो को लौज में है, जो बीच बीजक विचार उपजाये, नगर, धरतीये हुए म्हट चाहे हैं, कि दरवाजे से यह रूपसा लौट जाए।

फर्री, आर दक्ष गारो के, उवीर वालिते है इनकार करोगे, तो धाव चूर नहीं, तुम्में लोग, और मर से यह जीर्ण नहीं परोगे, वत्स पुनः लुप हरीगे, 'आत्मा की अति' - विनारी को मावरा (20 लौह) (30) शी । ।

2- अजीते हुम कैसे आदर, यजन कर सकते ? तुल्य विचार, भलवाओ, आकृतिण्य ने लो न, कर उँके नहीं आत्म विस्तार । 'कामायीयाओं' - अंडा, पूरे रुप
वादन उम्मी प्रश्नों के मूल में नारो-भावना का विरास्त है। विनाश जा ने का कारण इस्लामीयों का समाधान प्रस्तुत किया है। नारो-विरोधी बाध्य को यथार्थ-वाक्य के ग्राम में कैदो नारो उल्लेखनीय है -

और यदि केवल रमाकर
समाधिया में लेगें,
तुम वषाः जाओगैं कि
भोंतर तू कह लगा रहा है,
व्याकरण मुल्लित परम्परा में रह गया है,
अल्लाम कौई नारो उसके ग्राम में है?

नारो-भावना के आध्यात्मिक रुप-वैनुवन्य के दर्शन के लिए इसको उससे त्यागक उपेक्षा नहीं करना चाहिए, क्योंकि नारो-भावना के आध्यात्मिक पउर का आबाद उसका तिन्द्रक रुप चैन्य हो है।
वब तक आप इत्ते वारण का वन्य नहीं कर पायेंगा, तब तक नारो के आध्यात्मिक पहलुक पूर्णता आबेग है। तब, लोकर कौन हो उसके आध्यात्मिक रुप का सम्पर्क करता है?

पुरुशवा और उव्हियों का पुनाल आल्यान नारो के आध्यात्मिक रुप के विकास का हो सथायान है। पुरुशवा उव्हियों उपवरा के तिन्द्रक रुप-वैनुव द के पुड्दल हो आविष्करित होते हैं। इस चर्मशैत्य के आविष्करित होते हुए मो इसके कार्यक रुप वैनुव द के उपरोक्त हैं। तब तहत रहते रहते हैं, क्योंकि उन्हें नारो के आध्यात्मिक पहलु तक भी पूर्णता है। पुरुशवा नारो उव्हियों के तिन्द्रक अयोर के वास्तव से हो उसके अलौकिक रुप मन एवं प्राणार के वृद्धि लोक तक पूर्ण पाते।

1- हर्ष की विशिष्ट - कविता और काम, (रोनो) पृ 380
2- उद्धरण, पृ 38
है। यह भौतिक ज्ञात्व का तीता रूप लोक्य आकारण्य वा व्यवस्था को तात्किक
क्ष पर उठाकर अलोक्य स्तर तक पहुँचाता है। भौतिक ज्ञात्व के सभी आकार-
ण्यें नायर का रूप-धार्मिक हें प्रभु आकारण्य है। इस लोक्य रूप-
धार्मिक के आकारण्य के प्रभु सौभाग्य हें अलोक्य-वायुमाग्यक हृप-धार्मिक
के दृश्य होते हैं। पुरावर नायक तभी उवज्ञों नायिका के मार्ग से हुए अलोक्य नृप-धार्मिक
के पार किसी गुप्तक वायुमाग्यक हृप-धार्मिक के पार के लिए आकुल हो
उठता है।

रूप का उपलब्ध लिङ्ग के परिच्छे के लिए
कोई सौभाग्य है कि,
चाहता हैं। मैं उसका जाना हूँ।
पन्थ ही धार्मिक के आराधना का त्योहार में पादिस
शृंगार को उस रूप को पहचान लें।

काम रंग प्रस्तुति दत्त सहस्र मनोवृत्ति है। प्रत्येक जो ये-काम-भावना
मिलता है। दिःशा जो के कायम की तारो-भावना भी कई प्रस्तुत कामनायों हो
है। इस कामनाय का संकाय ही आकुल को प्रस्तुति क्रम देता है। वर्त्ता
प्रभु और उसी त्राना काम तथा काम तथा काम के लिए प्रस्तुति को यह चक्षुच्चलता हुता है।

काम रंग प्रस्तुति की कामयो की प्रस्तुति?

(पुष्पवर्णन)

उसका रंग है यह त्राना स्पष्ट हो जाता है कि जिनका काम तीर
हृप अधूरू में कोर्टवान्ति हो अस्वाद है, और काम को आश्रम प्रति प्रस्तुति

-----------------------------

- पुरावर और उवज्ञों का स्मृत पात्र शरीर के धरती पर नहीं रूकता, वह
  शरीर के भव्य शक्ति रूप और प्राण के रूप, गृह्य तौली ये प्रस्तुत करता है,
  उत्स भौमत्तिक आधार है उठाकर रश्स्य और वात्स्य कैल्जियम्स ये विचारण
  करता है। उवज्ञो - प्रामिका, पूरा है।
- यह, न्यूरीय अंक। पूरा है।

-----------------------------
"नारो" है, तो किर नारों के इस काम रूप क्यों कुछ भाव 
में की प्राप्ति के हो तकते है? महाकवि पुराण जो ने या इस कामे भावना 
का समय उसने काय्य मै लिखा है:

जिससे मानवों-भावना के विरूधो विद्रोह हुआ है, निश्चित रूप है 
उ-उ उ-उ जी हो के प्राप्ति के हो सम्भव हुआ है, यह अनुमान करना के 
दिकार जी ने करत कर लिया है, क्या फि पूर्णवरणा मै स्पष्ट है -

"विनायक कामे शाहें शाहें,
यह एक तैयर स नरी जपना।"

वह हमारे पूर्ण लघु अनुकारणों गुण्य के अर्थ की प्राप्ति कामयो 
नारो के केवल का अलंकारित दिशानि ने हां मानते है तौ किर दिकार जी को 
आयातम्यो नारो-भावना कर का आयन तु जी हो प्रक्षण न मानते 
जाय।

आयातम का पूर्ण दिशानि द्वारा-आनंद है निसाप मानता है।
क्षमता रूप आनंदमय है और इस आनंद को पूर्ण प्राप्ति काम-भावना से 
हो प्राप्त होता है। जो स्वयं का काम-भावना की उपेक्षा करते है, निश्चित 
रूप है वे आनंदमय नहीं हो सकते है। जल्द आनंद का आयातम के रस में 
ग्रहण करता है, तो कामय करते। इस कामय हो तो आपक कान्तारा के 
आयातम का रूप के दृष्टि दो यात्र करते है।

महाकवि दिकार ने अनो काय्य में इस कामय रूप की बड़ी आयातम 
प्रक्षण का है। इस कामय के भाव में पुरुष्य नारो-भावना के आयातमक

- ॥ देव के ॥ तुम कायत 
जितिलालों का करकुमारन, 
काम ने भिन्न से हो जी जान,
पवित्रता है न कर अनाजन के कामानो - अद्वै, ६० ६०
रूप तक प्रत्येक हो नशें बजाता है। कामयाब रूप से हो उस चित्र में देवता की तुषारा बाग्लत होते हैं -

उन्हें तक यह पावन श्रद्धा, तमों तक मायावन्दन के जाते हैं,

चारों-नारा के नहीं-स्वामी विद्वानों दोनों हाँ गुद्दार्द करते हैं।
मधुर आवागमन का बावजूद के बाहर प्रीति का वन है,
पूरा उपहार को देव वेदेऽलों रहस्य फूलता है मन है।
शरदा का वाद उसो कैसे उल्लम्ब में तुम्हें स्वीकार होते हैं,
यदि श्वान-क्रिया में मूर्ति देवला की कन मैं फिर जाता हैं?

काम का नारा के प्रति आकर्षण पाया गई तो ज्ञाता है और फिर

सर्व उसी हाँ नारा का भावना नारा के अध्यात्मिक पाया के दौरा कर रामस्य का जाता है। तो यह उव्वशों नारों
के इस अलंकार अध्यात्मिक रूप ही अमृत स्नान कर कराता है, नारा के इस अलंकार अध्यात्मिक रूप ही अमृत स्नान कराता है, नारा के इस अलंकार अध्यात्मिक रूप ही अमृत स्नान कराता है,


dandanh - प्रकृति, पुड़ा 56

dandanh - प्रकृति, पुड़ा 56

dandanh - प्रकृति, पुड़ा 56

dandanh - प्रकृति, पुड़ा 56

1. उव्वशों - तुलसी अंक, पुड़ा 46
2. जावन में श्वान अर्द्ध और गिरे दिखा श्वान के लिए जिन्हें उन आदर्श हैं, ते कहाँ
   न कहें, आदर्श के पार है जो फूटते हैं। जिक्र आदर्श उद्योगित अपना
   अवाहन है, वह जावन में वहीं लूपक हूथर है विस्तृत रह गया है।
   उव्वशों - श्वान, पुड़ा 56
3. वधारे, श्वान तुलसी अंक, पुड़ा 57
पुरावा उर्वशी के आध्यात्मिक रूप-सौन्दर्य का चित्रण ठाकुर माति करता है, जो कोई जन्म ताक्तक अपने जाराज्य भवान कार्यकर के क्रिया करता है। नारो का आध्यात्मिक रूप सौन्दर्य प्रकृति को निष्कृति करता है -

"अब भी तो तुम दोष रहेंगे हिस्कृति आदि उपाधि से, 
इतने विकसितों तो अर्की हों तो करो क्यों-क्यों फूली हो। 
युग - युग का पृष्ठवर्ग है-हैं जो किशोर शुष्क तबा पर। 
क्योंकि काल के स्पर्श-वाणिक संगठन का दान नहीं है"